दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

DEPARTMENT विभाग : ललित कला एवं संगीत विभाग

Syllabus for Research Eligibility Test (RET) (भाोध पात्रता परीक्षा का पाठ्यकम)

Section A खण्ड–अ

दृश्यकला एवं मंचकला

(संयुक्त प्र”न पत्र)

UNIT - I

1. शोध : तात्पर्य एवं परिभाषा
2. शोध का लक्ष्य, शोध की प्रकृति एवं प्रकृया

UNIT - II

3. कला / संगीत में शोध की दि”ााएँ
4. विषय निर्वाचन : क्षेत्र का ज्ञान, रूचि उत्सुकता, विषय की उपादेयता समस्या चुनाव का मानदण्ड, विषय निर्वाचन पद्वति।

UNIT – III

5. परिकल्पना, दत्त संकलन, दत्त संकलन की विधियॉ, दत्त संकलन के उपकरण, पर्यवेक्षण, साक्षात्कार, अन्वेषण प्रपत्र, अनुसूची मनोवैज्ञानिक परीक्षण।

UNIT - IV

6. दत्त सामग्री का वि”लेषण एवं व्याख्या।
7. शोध प्रबन्ध प्रतिवेदन।

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर वि”वविद्यालय, गोरखपुर
ललित कला एवं संगीत विभाग
भाोध पात्रता परीक्षा पाठयकम (RET)
दृश्यकला
विशयगत पेपर – द्वितीय प्रश्न–पत्र

भारतीय चित्रकला (पेंटिंग)

अजन्ता, बाघ और म्यूरल परम्परा, पूर्व ऐतिहासिक आकारगत और शैलीपरक पक्ष, पाण्डुलिपि, चित्रकला (पूर्व भारतीय एवं दक्षिण भारतीय), सुलतानी (माण्डु), चौरापंचसिका शैली तथा अन्य पूर्व मुगल शैली, मुगल (अकबर से शाहजहॉ), राजस्थानी (मेवाड़, बूंदी, कोटा, बीकानेर, जयपुर, कि”ानगढ़, आदि), मालवा, पहाड़ी (बसोहली, गुलेर, कांगड़ा) तथा देक्कानी (अहमद नगर, बीजापुर तथा गोलकुंडा) शैली आदि।

भारतीय मूर्ति कला (स्कल्पचर)

इण्डस वैली के मूर्तिकला के आकारगत एवं शैलीपरक पक्ष–मौर्य, शुंग, सतवाहन, कु”ाान (मथुरा और गंधार), गुप्त (बौद्व, ब्राह्राण और जैन), चालुक्य, गुर्जर प्रतिहार, पल्लव, चोल, राष्ट्रकुट, होयसला, ककत्तिया, पल–सेना, ओड़ीसन, सोलंकी तथा परमार काल आदि।

भारतीय वास्तुकला (आर्कीटेक्चर)

इण्डस वैली में वास्तुकला के आकारगत तथा शैली परक पक्ष, स्तुप (भरहूत, सांची, अमरावती, सारनाथ), के गुफा मंदिर (भ़ज, कार्ले, अजन्ता, नासिक, लोमस ऋषि, कन्हेरी, आदि) गुप्त (उदयगिरि देवगृह, नचना आदि), चालुक्य (बदामी, एहोले, पट्टदाकल, आदि) पल्लव (महाबलीपुरम, कांचिपुरम, आदि) राष्ट्रकुट (एलोरा) गुर्जर प्रतिहार, सैन्धव–मैतर्का, चन्देल (खजुराहो), उड़ीसा (भुवने”वर, कोणार्क) चोल (तंजोर तथा गंगोआकोंडा, चोलापुरम्, दरासुरम्, आदि) हायसला (बेलूर, हलीविड, आदि), ककतिया, कल्याण, चालुक्य, सोलंकी, (मोधेरा, रानी की वाब, इत्यादि) परमार, नायुक तथा विजय नगर (हमपि लेपाक्षी) मुस्लिम वास्तुकला, सुलतानी तथा मुगल माण्डू दिल्ली, आगरा, फतेहपुर सीकरी आदि।

भारतीय प्रतिमा भाास्त्र (आइक्नोग्राफी)

प्राकालीन प्रतिमा पूजा (इमेज व”ाीप), विष्णु, ि”ाव तथा शक्ति कल्ट का विकास तथा उनके प्रतिमा शास्त्र (आइक्नोग्राफी) के रूप, सप्त–मात्रिक, लक्ष्मी, सूर्य, यक्ष, गणे”ा तथा कार्तिकेय।

हिन्दू मंदिर तथा मूर्ति विज्ञान (अ"त) (दिक्पलस, नदी देवियॉ, आदि) बौद्व विवरण– वर्णन (जातक गाथाऍ तथा बुद्व का जीवन) मूल तथा बुद्व के इमेज़ (प्रतिमा) का विकास तथा बोधिसत्व (अवलोकीते"वर, मैत्रेय, अ"तमहाभायातरण अवलोकिते"वर, मंजूश्रो (मंजूश्री)) तारा और कुबेर/पंचिका। तीर्थकरों का प्रतिमा विज्ञान (ऋष्भनाथ, महावीर, पा"र्वनाथ, नेमिनाथ), बाहुबलि, जैन यक्ष तथा यक्षि, अम्बिका, साइनेरेटिक परिकल्पनाऍ (इमेजिज) आदि। मध्य कालीन चित्रकला में वर्णन (इमेजिज)– गीत–गोविन्द, रामायण, लौर्चंद, रागमाला, रसमंजरी, कल्पसूत्र तथा कल्काचार्य कथा, आदि।

सौंदर्य बोधात्मक (ऐस्थेटिक्स) तथा कला समीक्षा इतिहास

भारतीय कला के सामान्य सिद्वान्त, कला तथा सुन्दरता, परिकल्पना (इमेज मेकिंग) के सिद्वान्त (प्रतिमा मान विज्ञानं तथा अन्य कैननस्), भारतीय चित्रकला के छः लिम्बस (षड्ग) तथा छै चीनी चित्रकला के छै कैननस्, रस, ध्वनि, अलंकार, औचित्य तथा रीति के सिद्वान्त तथा अन्य कला–प्रस्तुति (मेकिंग) तथा व्यूइंग की समझ में इनकी प्रासंगिकता। दृ"य कला और परफार्मिंग कला में अन्तरसम्बंध, चित्रसूत्र में चित्रकला का वर्गीकरण। क"यवरिद्वि, गुण–दोष, 'ाड्ऋषिः, वर्तन, निम्नोन्त, आदि का सिद्वान्त। कला के दृ"य और अदृ"य पक्ष (दृ"य/अदृ"याम), रेखा (लाइन) लिनीअर रिदम (छंद) कला के संगठनात्मक (कम्पोज़ी"ान्ल), पक्ष, परिदृ"य, रूप तथा कथ्य। संरचना–साधन (विष्णुधर्मोत्तोर, बृहत्सम्हिता तथा अन्य ि"ाल्प"ाास्त्र पाठ) का"मीरी सौन्दर्य"ाास्त्री।

कला–इतिहास का क्षेत्र (स्कोप) के बीच वि"िाष्टता तथा अति व्याप्ति। कला–समीक्षा, सौन्दर्य बोधात्मक पद्वतियॉ। कला–इतिहास तथा इन्थ्रोपोलॉजी, आरक्योलॉजी, सांस्कृतिक इतिहास तथा फिलालॉजी (भाषा शास्त्र) के अन्तसम्बन्ध। एक ज्ञानानु"ाासन के रूप म कला–इतिहास का विकास। कोत्रोसेउर"िाप तथा केटेलोग रीसेन। रूपवाद (फार्मालिज़्म) का विकास (वोल्फलिन, रिगेल, रोज़र फ्राइ, ग्रीनबर्ग), आइकोनोलॉजी (गोमब्रिच तथा पनोफस्की), विजुअल परसेप"ान (रूडोल्फ अर्नहीम) तथा नया (न्यू) कला–इतिहास (ब्राइसोन, हल फोस्टर), आनन्द कुमारास्वामी तथा स्टल्ला क्रमरिस्च तथा उनकी भारतीय कला ऐतिहासिक अध्ययन में प्रासंगिकला।

कला तथा सौन्दर्यबोध शास्त्र सम्बन्धी पा"चात्य दृष्टि (सोच): प्लेटो, अरस्तू, अल्बर्ठी, वासरी, बेल्लोरी, रेयनोल्डस्, डिडेरोट, विन्केलेमान, क्रोचे, टालस्ताय आदि। कलाकारों का लेखन और आधुनिक कला आन्दोलनों के मेनीफेस्टोज़ (लक्ष्य), अवंत–गर्डे का सिद्वान्त। सिमोटिक्स सिद्वान्तों का आ"ाय (इम्पलीके"ान) संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद, उत्तर आधुनिकतावाद तथा स्त्रीवाद (फेमीनिज्म) कला सोच और लेखन में।

यूरोपीय कला (वास्तुकला, मूर्तिकला तथा चित्रकला)

पूर्व–इतिहास कला (फ्रांस और स्पेन), क्रेटन, ग्रीक, रोमन, इतरूइसकन, प्रारम्भिक क्रिसूचियन, बाइजेन्टिन, गोथिक, रेनैसांस, मानेरिस्ट, बरोक्यू, नियो–क्लासिज्म, रोमांटिसिज्म, रीयलिज्म, इम्प्रे''ाज्म, उत्तर (पोस्ट) इम्प्रे''ाज्म, सिम्बोलिज्म, फौतिज्म, क्यूबिज्म, एक्सप्रे''यनिज्म तथा अन्य एबस्ट्रेक्ट ट्रेंडस (आयाम) फयूचरिज्म, दादावाद, सर्रेलिज्म, एबस्ट्रक्ट एक्सप्रे''ानलिज्म, ओपी, पॉप, मिनीनिमल, नियोफिग्रे''ान तथा उत्तर–आधुनिक काल में विभिन्न कला–विकास (इतालियन ट्रांसवेंतगर्डे, जर्मन नियोएक्प्रे''ानिज्म, हैप्पनिंग, इंसटाले''ान (स्थापना), फेमिनिस्ट और गे कला।)

प्राचीन कला और वास्तुकला पूर्व के निकट (ऐन्''ायट नीअर इस्ट)

इजिप्सिअन मेसोपोटामीयन सुमेरियन, अक्कादिअन, अस्सेरियन, अचेमानिद मिनोअन तथा ससानिअन, संस्कृतियों की कला।

पूर्व दे''ा (ओरिएंट) की कला तथा वास्तुकला

दूर ईस्टन की कला (चीनी तथा जापानी), इस्लामिक, केन्द्रीय ए''ाया, नेपाल, तिब्बत, श्रीलंका, कम्बोदिया, जावा, स्याम तथा बर्मा।

आधुनिक भारतीय कला

कम्पनी स्कूल, बाजार चित्रकला, ब्रिटि''ा कला स्कूल, कालीघाट पेंटिंग (चित्रकला), राजा रवि वर्मा तथा इनके अनुयायी नियो बंगाल स्कूल (रीवाइवलइज्म तथा प्रारम्भिक आधुनिकतावादी) : अबनिन्द्र नाथ टैगोर तथा इनके ''ाष्य, नंदलाल बोस, बिनोद बिहारी मुखर्जी, रामकिंकर बैज, रवीन्द्र नाथ टैगोर, गगनेन्द्रनाथ टैगोर, जामिनी राय तथा अन्य। कला ''ाक्षा में शान्तिनिकेतन की भूमिका।

अकादमिक / प्रोफे''ानल वास्तुकार, चित्रकार, महात्र तालिम, डी0 पी0 राय चौधरी, धुरन्दर, हेमन मजूमदार, ठाकुर सिंह आदि। प्रारम्भिक आधुनिकतावादी : अमृता शेरगिल, करमारकर, जार्ज क्येत। कला 1940 तथा 1950 में : बंगाल फेमिन तथा कलाकार (सोमनाथ होर, चित्त प्रसाद, जैनल अबेदीन, गोबर्धन अ''ा, सुधीर खस्तगीर), कलकत्ता, मद्रास, बम्बई तथा दिल्ली में प्रगतिवादी कला आन्दोलन। अन्तराष्ट्रीय आधुनिकवादी तथा कलाकार : एफ0 एन0 सौजा, प्रदोष दास गुप्त, के0 सी0 एस0 पनिकर, बी0 सी0 सान्याल, दिनकर कौ''ाक, निरोद मजूमदार, परितोष सेन, एम0 एफ0 हुसैन, अकबर पद्मासी, राजकुमार तथा अन्य। स्वतंत्र कलाकार : एन0 एस0 बेंद्रे, के0 के0 हेबर, शंखों चौधुरी, कृष्णा रेड्डी, धनराज भगत, वाई0 के0 शुक्ल, पीलू पूचखानवाला, वी0 एस0 गायतोंडे, सन्थनराज, डविअरवाला तथा अन्य।

कला में 1960 तथा 70 में चित्रकला, वास्तुकला, म्यूरल तथा प्रिंट मेकिंग में इनडीजीनिस ट्रेंडस (आयाम) परिदृ"य– के0 जी0 सुब्रामनियम्, के0 सी0 एस0 पणिकर (चोलामंडल कलाकार (गॉव) रेड्डप्पा नायडू, एस0 बी0 पल्सीकर, जानकी राम, मीरा मुखर्जी, ज्योति भट्ट, जे0 स्वामिनाथन, नियो तांत्रिक कला, आदि।

चित्र–मूर्ति सम्बन्धी (फिग्रेटिव) – विवरणात्मक प्रवृत्ति 1960 से : विका"ा भट्टाचार्य, गणे"ा पाइन, ए0 रामाचंद्रन, आर0 बी0 भास्करन, लक्ष्मण गाउड, जोगन चौधरी, भूपेन खक्खर, अंजोले इला मेनन, अर्पिता सिंह, गोगी सरोज पाल, अर्पणा कौर, विवान सुंदरम् तथा अन्य।

1960 से अमूर्तीकरण (एब्स्ट्रक"ान) की प्रवृत्ति : राधव कनेरिया, जयराम पटेल, पी0 बार्बे, राम कुमार, एल0 मुत्रूस्वामी, पी0वी0 कोल्ते, जगमोहन चोपड़ा, बलवीर सिंह कत्त, नागजी पटेल। स्थापना (इन्स्टाले"ान), मल्टी मीडिया, परफार्मेटिव, हैपेनिंग कला का विकास–नलिनी मलानी, वेद नायर, विवान सुन्दरम् तथा अन्य।

ट्राइबल, फोक (लोक) तथा पापुलर कला (डिज़ाइन तथा फंक"ानल कला इसमें सम्मिलित हैं)

अफ्रीकन, औ"ायनिक, नार्थ वेस्ट कोस्ट अमेरिकन, मेक्सिकन, इण्डियन (भारतीय), साउथ ईस्ट एि"ाया कला।

भारत : पट चित्रकला (राजस्थान, बंगाल, उड़ीसा), मधुबनी, वरली, पिथोरो चित्रकला। डोकरा ब्रोन्जस, टेराकोटा होर्सिस (गुजरात, यू0 पी0, बंगाल, एम0 पी0, तमिलनाडु) वुड कारविंग, (कोंडापल्लि, कर्नाटक (भुट), बंगाल, एम0 पी0) लेदर पॉपेट्स (ए0 पी0, कर्नाटक)। भारतीय परम्परित तथा आधुनिक डिजाइन तथा फंक"ानल कलाएँ : टेक्सटाइल्स : बनारस, कांचपुरम, गुजरात ब्रोकेड, बाजुचरी, ढाका मलमल, पैथानी, कट्कि तथा नये इस्टर्न प्रदे"ा की टेक्सटाइलस्। टाई एण्ड डाई फेबरिक्स, एम्ब्राडेरीज (फुलकारी, चम्बा रूमाल, कंधा) मेटलवेयर (बिडरी, रपाउसे, एनामेलिंग) जेड, बीड्स, ज्वेलरी तथा अन्य।

आरेखन और चित्रकला (ड्राइंग–पेंटिंग)

चित्रकला (पेंटिंग) के मूलाधार, प्रधान तत्व–बोध (ज्ञान), परस्पेक्टिव बैल्यूज (मूल्य), दृ"य (विज्युअल) सिद्वान्त, रूप, स्पेस, इल्लूज्म, परिकल्पना। विचारों के विकास की कालक्रम बद्वता। दृ"य वास्तविकता, कंसेप्चुअल वास्तविकता (रीयलटी), ट्रेडी"ानल (परम्परित) तथा क्रम"ाः (ग्रेजुअल) कला विकास, विभिन्न दृ"य–कलाओं की वि"ािष्टता (वि"ाषज्ञता) के वैचारिक तत्वों से युक्त के आधार पर।

मीडिया तथा सामग्री तथा उनका प्रयोग, स्केचिंग तथा ड्राइंग (आरेखन) सामग्री, उपयोग, तैल चित्र (आयल पेंटिंग)– अल्ला प्राइमा तथा प्राचीन मास्टर प्रक्रिया, ग्लेज़िंग तथा स्कम्बलिंग, प्राइमिग ऑफ कैन्वास, विभिन्न प्रकार के तेल, ब्रु"ा आदि। टेम्परा तथा गाउचे तथा उनके प्रयोग चित्रकला में– परम्परित तथा अपरम्परित कलावा"ा। कागज और सिल्क धोने की पद्वति। एक्राइलिक, पेस्टल, मिश्रित माध्यम, जल रंग म्यूरल तथा म्यूरल तकनीक– फ्रेस्को–सेक्को तथा फ्रेस्को बूनो, अजन्ता और विभिन्न आधुनिक मीडिया, रिलीफ तथा मिश्रित मीडिया म्यूरल में।

कोलाज, एन्कास्टिक वेक्स की तकनीक।

चित्रकला में सहयोग : केन्वास, पेपर, वुड, सिल्क आदि की तकनीक।

चित्रकला के प्रकार, ओपेन एयर पेंटिंग्स, पोटट पेंटिंग, हेड तथा फुल फिगर्स एवं मेल तथा फीमेल का अध्ययन। लैंडस्केप पेंटिंग, पेट्रोनाइज़ड कला, चित्रकलाएँ विभिन्न कला आन्दोलनों में स्टिल लाइफ, थिंमेटिक, एब्स्ट्रक्ट आदि।

बनावट के सिद्वान्त, कलाकारों के निजी विचारों (दृष्टिकोणों) का प्रतिच्छाया–प्रभाव–प्रस्तुति, विचार (कंसेप्ट) का विकास। रचनात्मक चित्रकला की प्रक्रिया। सौन्दर्यात्मिक और दा"ानिक आधार पर विचारों की अभिव्यक्ति। कलात्मक अभिव्यक्ति विभिन्न सामाजिक एवं संरचनात्मक परिवर्तनों के बीच। कला तथा परिवर्तन।

तकनीकों, रंगों, रंग–सिद्वान्त का उपयोग– कला–गतिविधियों में रंग–सिद्वान्त का उपयोग–प्रयोग, रंग–ऐक्य, परम्परित रंग–उपयोग तथा रंग–उपयोग कारणयुक्त।

रंग–तैयारी, संरचनात्मक, तकनीकी पक्ष पिग्मेंट का। विभिन्न परम्पराओं के साधन तथा प्रभाव। कलात्मक मूल्य की समझ और अध्ययन, रूप–संरचना, आकार–"ोप्स, प्लान्स (योजनाएँ) खण्ड तथा पूर्णता में, उद्द"य तथा दि"ाा आयामों के दो–तीन की सही मसझ।

फाइन आर्ट्स/विजुअल आर्ट में सौन्दर्य बोध, शास्त्र के अध्ययन की प्रासंगिकता। भारतीय संस्कृति में प्रारम्भिक दा"ानिक विचार। समाज में कला के कार्यो की प्रकृति तथा प्रस्तुति। रस–संकल्प, 'ाड़ग, ध्वनि, अलंकार आदि परम्परित कला में। कला तथा सुन्दरता का संकल्प, विचार, कल्पना, इन्टयु"ान रूप तथा कथ्य– सबलाइम, सहानुभूति, एमपेथी, क्रियेटिविटी, ऐलग्री, मिथक, द"ान ओर सौन्दर्यात्मक विचार– कॉट, हीगेल आदि की।

इतिहास–पूर्व भारतीय चित्रकला, क्लासिकल भारतीय चित्रकलाएँ, म्यूरल (अजन्ता, बाघ) तथा बाद की म्यूरल परम्पराएँ। पाण्डुलिपि चित्रकला, मिनीयेचर पेंटिंग, फोक तथा ट्राइबल चित्रकलाएँ।

चित्रकला का कम्पनी स्कूल

राजा रवि वर्मा, बंगाली स्कूल, अबनिंद्र नाथ तथा उसके अनुयायी (क्षितेन्द्र नाथ मजूमदार, समरेन्द्रनाथ गुप्त, के0 वेंकेटप्पा, अब्दुल रहमान चुगताई, असित कुमार हाल्दार, नंदलाल, आदि)।

नन्दलाल तथा उसके ि"ाष्य (राम किंकर, बिनोद बिहारी, धीरेन्द्र कृष्ण देव वर्मा, आदि)

अमृता शेरगिल, अकादमिक यथार्थवाद, कलकत्ता ग्रुप (परितोष सेन, गोबर्धन आ"ा, निरोद मजूमदार, प्रदूष दासगुप्ता, हेमन्त मिश्र, आदि।)

समकालीन भारतीय कला में प्रमुख प्रवृत्तियॉ 1947 से

पा"चात्य चित्रकला में प्रमुख पड़ाव, ग्रीको–रोमन, बाइजेंटिन, गोथिक, रिनैसांस (रिनैसांस की पृष्ठभूमि, मानववाद तथा उसके सुझाव तथा निजी शैली के प्रारम्भिक विकास में– रिनैसांस तथा हाई रिनैसांस) वारोक तथा रोकोको (संकल्प तथा कुछ महत्वपूर्ण कलाकारों की गतिविधियों की पृष्ठभूमि में)

नियो क्लासिज्म, रोमांटिसिज्म, नियो रियलिज्म, इन्प्रे"ानिज्म, उत्तर इम्प्रे"ानिज्म, क्यूबिज्म, फौविज्म, दादाबाद, सुरलिज्म, एब्स्ट्रक्ट एक्प्रे"ानिज्म, ऑप, पॉप, नियो–फिग्रे"ान, कला उत्तर आधुनिक युग मे।

दृ"य संचार (विज्यूअल कम्प्युनिके"ान) में प्रयोगिक कला के महत्व को विभिन्न मीडिया, कंज्य्मर तथा प्रोडयूसर के सम्बन्ध में स्पष्ट करना।

विज्ञापन डिजाइन/ग्राफिक डिजाइन के सभी तत्वों की समझ–यथा टाइपोग्राफी तथा कैलीग्राफी (हेड लाइन, कॉपी), फोटोग्राफी, निमोनिक्स व्याख्या विस्तार, लोगो तथा सिम्बल, पंचलाइन/बेस लाइन/स्लोगन आदि।

कंवे"ानल एनिमे"ान (सेल एनिमे"ान) तथा आधुनिक एनिमे"ान (कम्प्यूटर एनिमे"ान 2 डी तथा 3 डी) एप्लीके"ान ऑफ कम्प्यूटर ग्राफिक वि"ाष प्रभाव हेतु।

विज्युअलाइजे"ान (मानस द"र्ान)

विज्युअलाइजे"ान के शोध साधन, सूचना सामग्री का संग्रह और विचार, यू0 एस0 पी0 का चयन, कंसेप्ट (समझ) का विकास, मीडिया चयन में अन्तिम निर्णय।

आउटडोर विज्ञापन

संचार में इसका महत्व। आउट डोर विज्ञापन के विभिन्न प्रकार, दूसरे मीडिया पर इसका प्रभाव। विज्ञापन नीति तथा सेंसरिंग आउट डोर मीडिया।

कैम्पेन विज्ञापन अभियान – प्रोडक्ट (पैकेज डिजाइन कन्टेनर के सरफेस पर, शुरू के लिए) कारपोरेट/सरकार तथा सामाजिक जागृति। द"ांक को दृष्टि में रखते हुए मीडिया के लिए सुझाव–दृष्टि–समझ। उपलब्ध मीडिया के नाम। मीडिया में नवीनता। नई तकनोक (कम्प्यूटर, डिजिटल प्रिंटर्स आदि)। टी0 वी0 ग्राफिक, मल्टिमीडिया प्रस्तुति, वेब–पेज डिजाइनिंग (रूपांकन) तथा सभी सॉफवेयर की समझ (पेजमेकर, कोरेल ड्रा, फोटो"ााप, फ्रीहैण्ड, ड्रीम वेवर, 3–डी स्टूडियो, आदि) इण्टरनेट, उसका प्रयोग विज्ञापन प्रोडक्ट्स के रूप में तथा सविसेस, नेट, मार्केटिंग।

विज्ञापन एजेंसियों का संगठन

विज्ञापन प्रबंध का अध्ययन, स्टूडियो बनाना, एक ग्राफिक डिजाइनर का उत्तरदायित्व तथा महत्व। कला–निर्दे"ाक (डायरेक्टर), विजुअलाइजर, क्रियेटिव हेड, सर्विस विभाग तथा कापी लेखक। क्रियेटिव डायरेक्टर, क्रियेटिव हेड तथा कापी लेखक कन्सेप्ट को सही रूप में कार्य रूप प्रदान करने के लिए उनका अन्तसम्बन्ध विकास। आधुनिक स्टूडियो वर्तमान सेनारिओ में– कम्प्यूटर, प्रिंटर, तथा स्केनर, आदि।

अन्य कलाओं से अन्तसम्बन्ध यथा मूर्तिकार, पेंटर, सेट डिजाइनर तथा इवेंट प्रबन्धन एजेंसियॉ।

विज्ञापन का प्रारम्भिक सभ्यताओं का इतिहास। गति"ाील पक्षों की शोध। प्रिंटिंग प्रोसेस का विकास : लेटर–प्रेस, ऑफसेट, ग्रेव्यूर, सिल्क–स्क्रीन, इम्बोसिंग, थरमोग्राफी, आदि।

कम्प्यूटर तथा उसका दृ"य प्रभाव में नवीनता लाने का महत्व। विज्ञापन में मार्किट शोध का महत्व। भारतीय विज्ञापन का इतिहास और विभिन्न मीडिया। भारत में प्रिंटिंग का इतिहास। प्रिंट–मीडिया बनाम इलेक्ट्रानिक मीडिया।

विज्ञापन का भारत में भविष्य। भारतीय विज्ञापन में मल्टिने"ानलों का प्रवे"ा। टॉप ग्रेड विज्ञापन एजेंसिया यथा एच0 टी0 ए0 लिंटॉस, मुद्रा, ओ तथा एम आदि तथा उनकी पहुॅच।

मुद्रण ग्राफिक आर्ट (प्रिंट मेकिंग) छापाकला का संक्षिप्त इतिहास

मुद्रण (प्रिंटिंग मेकिंग) के प्रमुख तत्वों का ज्ञान (1) सतही (सर्फेस) रिलीफ एवं प्लेनोग्राफी (समतल) (2) इन्टेग्लियो, (3) स्टेन्सिल, (4) अन्य माध्यम : कम्प्यूटर ग्राफिक्स, कागज बनाना, आयामी मुद्रण (डायमेन्"ानल प्रिन्ट्स), कोलोग्राफी, कोलाग्राफी, चिनकोले, मोनोप्रिन्ट/विलक्षण मुद्रण (यूनीक प्रिन्ट)

सतह (सर्फेस) : मुक्ति (रिलीफ)

आविश्कार

माध्यम काष्ठ मीडिया, काष्ठ नक्का"ी (वुड एंग्रेविंग), काष्ठ खुदाई (सुदूर पूर्व), लिनो खुदाई और लिनो उत्कीर्णन (एचिंग)

सामग्री : काष्ठ और रबर कारपेट (लिनोलियम)

यंत्र – रसायन, स्याही, मुद्रण म"ीन

डिजाइन बनाने की समझ (1) प्रका"ा से अंधेरा

मुद्रण पद्वतियॉ : (1) सिंगल ब्लाक मल्टी कलर प्रिंटिंग, (2) मल्टी ब्लॉक मल्टी कलर प्रिंटिंग।

सतह (सर्फेस) : लिथोग्राफी (अ"म मुद्रण : ि"ालामुद्रण)

माध्यम : आविष्कार ि"ालामुद्रण, ऑफसेट मुद्रण, ओलियोग्राफ

सामग्री और साधन यंत्र : पत्थर, प्लेट, टूल्स, रसायन (केमिकल), स्याही, प्रेस–फोटोग्राफ, एनजार्जारस।

तकनीक : पिसना (ग्राईडिंग), ग्रेनिंग, इमेज मेकिंग : ड्राइंग, फोटो–ट्रॉन्सफर, लिथो–एंग्रेविंग

टुलस या होने पेन्सिल/प्रतिलोप/अनुलोप (रिवर्स/री–रिवर्स) तकनीक इत्यादि।

उत्कीर्णन (एचिंग), पंजीकरण, मुद्रण (सिंगल ब्लॉक मल्टी कलर तथा मल्टी ब्लाक मल्टी कलर

पद्वतियॉ)

ऑफसेट प्रिंटिंग (मुद्रण) : आविष्कार

प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रक्रिया

रूप बनाना (इमेज मेकिंग) : हस्त–रेखा कला, फोटो (छाया चित्र) रूपान्तरण

समग्री तथा साधन–यंत्र : स्याही, रसायन, प्रेस (मुद्रण यंत्र)

मुद्रण पद्वति– प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष चित्रात्मक (पिक्टोरिअल) और आकारिक वि"ोषताएँ (फार्मल क्वालिटीज)–ि"ालामुद्रण और ऑफसेट की।

इन्टेग्लियो (उत्कीर्ण आकृति)

आविश्कार

माध्यम–ड्राई पाइंट, इन्ग्रेविंग, मेजोटिंट, एचिंग, काष्ठ उत्कीर्ण आकृति (इन्टेग्लियो), वेस्कासिटी

सामग्री– प्लेट्स : मैटल–धातु, अक्रालिक, काष्ठ और सनमाइका, इत्यादि : रसायन–टूल्स : प्लेट मेकिंग, इमेज़ मेकिंग, हस्तचालित (मैनुअल) और फोटो रूपान्तरण प्रक्रिया।

सादृ"य रूप परिकल्पना (एप्रोच टू डिजाइन)

प्रका"ा से अंधेरा (लाइट टू डार्क)

अंधेरे से प्रका"ा (डार्क टू लाइट)

मुद्रण में इन्टेग्लियो की विभिन्न तकनीकों की वि"ोशताएँ

स्टेन्सिल– (1) हस्तकटाई स्टेन्सिल, (2) सिल्क स्क्रीन (सेरीग्राफी)।

(1) हस्त कटाई स्टेंसिल : पद्वति और सामग्री

(2) सिल्क स्क्रीन (सेरिग्राफी), सामग्री (सरीन), सिल्क, वोल्टिग क्लाप, नाईलोन और पॉलिस्टर कपड़ा

यंत्र स्क्वोजी, फ्रेम, एक्सपोजिंग टेबल, मुद्रण मेज (प्रिन्टिंग टेबल)

रसायन : स्याही तथा अन्य यंत्र साधन

मुद्रण पद्वतियॉ : (1) हस्त चालित, (2) यंत्र चालित।

कम्प्यूटर ग्राफिक–(1) प्रत्यक्ष मुद्रण यंत्र द्वारा, (2) अप्रत्यक्ष प्रयोग (कम्प्यूटर जेनरेटेड इमेजेस) मेड टू ट्रांसफर आन अदर पिटमेकिंग मीडिया।

कागज बनाना आयामी प्रिंट

सामग्री

म"ीने और टूल्स (यंत्र–औजार), बीटर, ट्रे इत्यादि।

रसायन और रंग

तकनीक

फोटोग्राफ/कोलोग्राफ–सामग्री–ब्लॉक मेकिंग–प्रिंट पद्वतियॉ– (1) इन्टैलियो, (2) रिलीफ

चिनकोले–तकनीक

मोनोप्रिंट–विभिन्न तकनीकें

मिश्रित–मीडिया, मल्टी मीडिया तथा अन्य

मुद्रण का इतिहास

ए"िाया और यूरोप, विभिन्न मीडिया पद्धितियों का आविष्कार और प्रस्तुतियॉ, मुद्रण संचारित (सम्प्रेषित) मीडिया– सम्पर्क का माध्यम, 19वीं से 20वीं शताब्दी में पुस्तक प्रका"ान, विज्ञापन का प्रभाव, मुद्रण–छपाई चित्र कार्य"ाालाऍ।

व्यक्ति कलाकार का योगदान–डयूरर, रेम्ब्राट, होगार्थ, गोया, गंगुइन, डेगास, लौतरी, डौमिरे, जर्मन अभिव्यक्ति वादी (एक्सप्रेस्तिस्ट्स)–(कथे, कालविटज, नोल्डे, हेकेल, ग्रोज, मुंक आदि)

पिकासो, पोप तथा फिग्रेटिव कलाकार (रो”ानबर्ग, लिचेस्टिन, जिमडाइन), डेविड हॉकनी, कृष्ण रेड्डी, पिटर, डौग्लीस, स्टानली, जॉन।

जपानी बुडकट्स तथा ओक्0 यू0 इ0 स्कूल के महत्वपूर्ण मास्टर–यथा होकुराई, हिरोसिगे, उत्तमरो।

भारतीय प्रिंट मेकिंग

19वीं की मध्य भाताब्दी में प्रिंटमेकिंग

20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में बंगाल में प्रिंटमेकिंग– बटतला प्रिंटिंग तथा कालीघाट

व्यक्ति कलाकार : राजा रवि वर्मा, विचित्र क्लब के सदस्य, मुकुल दे, गगनेन्द्रनाथ टैगोर इत्यादि, शान्ति निकेतन स्कूल, नन्दलाल, विनोद बिहारी मुखर्जी, राम किंकर, वि”वरूप बोस, रमण चक्रवर्ती, हरेन दास, सोमनाथ होर, चित्तप्रसाद, ज्योति भट्ट, कॅवल कृष्ण, वाई0 के0 शुक्ल, बसन्त पर्व, जगमोहन चोपड़ा, परमजीत सिंह, ललिता लाजमी, नैना दलाल, लक्ष्मा गौड़–आर0बी0 भास्करण, पल्लानी अप्पन, सनत कर, लालू प्रसाद शाओ, अमिताभ बैनर्जी–देवराज दाकोजी, भूपेन खकर, वामन चिंचोलकर, पाल कोली, दीपक बैनर्जी, जय जरोटियॉ, प्रयाग झा, रीनो धूमल, अनुपम सूद, जयंत पारिख श्याम शर्मा आदि।

उच्च स्तरीय मुद्रण (प्रिंटर्स) तकनीकी और सौन्दर्यबोधक दृष्टि से मानदण्डों के आधार–मुद्रण छायाचित्र की प्रामाणिकता की परम्परित पहचान– हस्ताक्षर, संस्करण, कलाकार–प्रमाण (आर्टिस्ट्स प्रफुस) आदि। प्रिंट मेकिंग में समकालीन से सम्बन्ध विषय (यांत्रिक पुनः प्रस्तुति, कम्प्यूटर ग्राफिक, विज्ञापन के प्रभाव, पॉप कलाकार, प्रिंट मेकिंग कार्य”ाालाएँ आदि।)

मूर्तिकला (स्कल्पचर)

मूर्तिकला : कल के रूप में प्रमुख तत्व–ज्ञान, मेकिंग–बेसिक कंसेप्ट्स (संकल्प), दृ”य संकल्प, सही ज्ञान, मूर्तिकला के मूलाधार, फिग्रेटिव तथा नान–फिग्रेटिव मूर्तिकला।

माध्यम (मीडिया) और सामग्री (मिट्रिअल्स) : काष्ठ (वुड)–काष्ठ के विभिन्न प्रकार– सख्त (हार्ड) तथा नरम (साफ्ट) फाइबर्स में ब्लैक इबोनी टू साफ्ट (फॉर वेराइटी) प्रका"ा रंग युक्त काष्ठ (कम्प्रेस्ड फिब्स) रफ तथा स्मूथ ग्रेन पर आधारित यथा इबोनी, शी"ाम, टीक, हल्डू आदि।

पत्थर (स्टोन्स) : मूर्तिकला यंत्र और कर्व पत्थरों की पहचान में शताब्दियॉ लगी। इग्रीअस राक्स, बोलकेनिक राक्स है, जिनसे मूर्तिकला बहुरंगी ग्रानिटेस और बसल्ट हुई।

सेडीमेन्टरी राक्स यथा सैंड पत्थर ओर लाइम पत्थर। शताब्दियों में लेअरस के आकार में बना।

लाइम पत्थर : काटने में नरम पर संरचनात्मक (टेक्स्चर्ड)

मेटामोरफिक : सेडिमेन्टरी तथा इग्रीयस– जब गर्म किया गया तथा दबाया गया– सख्त हुआ पर ट्रांस्लूसेंट भी कभी–कभी तथा मार्बल–ग्रीक तथा रोमन काल से प्रसिद्व हुआ तथा चुनौती पूर्ण ढंग सुंदर आकार के मास्टर पीस तैयारी में निरन्तर रहा, जो रिनैसांस काल में अपनी तरह का निराला था– बारोक में इसका उपयोग वि"ाष्ट था। मिकेलंजलो डेविड तथा बेरनिनी फ्लोइंग ड्रापेरी तथा रोदिन किस तथा प"चात् भारत में दिलवर मंदिर उत्साही उदाहरण हैं।

प्रत्येक धातु की सम्पत्तियॉ

लेड और जिन्क लुप्त क्यों है तथा कॉपर आदि में अधिकता–बढ़ौतरी आदि का अध्ययन।

टेराकोटा : विभिन्न प्रकार के क्लेज, वैरिंग इन पोरोसिटी टू रफ और फाइन का मिश्रण ग्रोग फार बेटर फायरिंग पोसीबलिटीज (अग्रि सम्भावनाओं क दृष्टि से)

अर्दन वेयर, पत्थर वेयर

वैक्स :

सेरेमिक तथा पोर्सलीन तथा चाइना। सैंड, फ्लिंट, बाल क्ले, वेन्टोनाइट ग्रोग से अधिक प्लास्टीसिटी मिलती है तथा इससे कार्य में रंग विविधता भी। विभिन्न प्रकार के किलन्स बनाने

के लिए धातु कास्टिंग मोल्ड्स, टेराकोटा तथा सेरेमिक। अधिक मोल्ड्स के लिए ऊपर ग्राउंड तथा किलन्स तैयार किए जाते है। सेरेमिक वी0 अधिक तापमान का प्रबन्ध 1000 डिग्री सेल्सीएट से अधिक बांछनीय है।

पापीअर मे"ा–पेपर पल्प फाइबर्स तथा क्ले बाडीज के विभिन्न तरह के मिश्रण से आ"चर्यजनक संरचनात्मक परिणामों के लिए

प्लास्टर ऑफ पेरिस–"ाुद्व माध्यम स्वरूप प्रयुक्त तथा अन्य माध्यम से मिश्रित भी

सीमेंट, ईटें, रेत तथा पेब्बलस–इनका मेल

फाइबर ग्लास तथा रेसिन कास्टिंग के लिए

वेल्डिंग तथा ब्रेजिंग

प्रका"ा, लेजर बीम्स

लोहे की सलाखें

बम्बुज् तथा रस्सियॉ

व्यर्थ सामग्री– यथा प्लास्टिक थैले, कागज तथा कोई कैन्स आदि

सामग्री का पुनर्स्थापना यथा– लेड पाइप्स, ब्राड पाइपें, कोणदार लोहे, तारों को लपेटना, बड़े तथा छोटे कीले, काष्ठ स्टैंण्ड, गतिमान तथा स्थिर।

यंत्र पत्थरों में मुड़ाव शताब्दियों से मूर्तिकारों द्वारा पूर्व निर्धारित कम अनुसार यंत्रों का उपयोग (प्रयोग) सम्बन्ध रहा है।

बड़े चंक्स की हैकिंग तथा चिपिंग के लिए पिचेर का प्रयोग

पंच–रेत पत्थरों के लिए प्वाइंट चिजेल फ्लैट्टन्ड पंच का उपयोग।

क्लाब– पंच करविंग के बाद– ब्राड फ्लैट चिजेल

चिजेल (छैनी) टर्म जो अधिका"ातः स्पष्ट काटने में प्रयुक्त होता है हार्ड ग्रानाइट्स से टांगस्टेन टिप्स को आसानी से निर्मित किया है।

यंत्रों को, विभिन्न प्रकार के पत्थरों को आकार देने के लिए उन्हें सख्त और नरम होना अपेक्षित है।

हथौड़ों की विविधता यंत्रों के अनुकूल हो –आकार तथा भार

काश्ठ कार्विंग टूल्स – विभिन्न प्रकार की आरियॉ, कुल्हाड़े, बंद आरा, चौखटी आरा, धनुआरा, गोल आरा, जंजीर आरा, काष्ठ देख छेनी, वुड गेज आव"यक हैं।

सैंड पेपर्स आदि सरफेस ट्रीटमेंट–पालि"ा के लिए यथावत्।

पूर्व कथित विभिन्न सामग्री के उपयोग की तकनीक–मूर्तिकला निर्माण के लिए गढ़ी (स्वरूप तैयारी), बनाई तथा वेल्ड की जा सकती है।

धातुएँ– कांस्य, पीतल, अलुमीनिअम (सैंड कास्टिंग, लॉस्ट वेक्स प्रक्रिया सिरे पेडयू) हस्त सामग्री पद्वति निर्माण में, स्वभाव–प्रकृति की सम्भावना (औचित्य) को ध्यान में रखते हुए कास्टिंग की सीमाएँ। प्रत्यक्ष थोथी परिकल्पना (हालो इमेज) निर्माण में लेअरल (तहों) के दबाव में तार तथा जागेरी के साथ सैंड की वि"ाष्ट तैयारी–प"चात् धातुओं की ढलाई कोटरिका (काविटी) में आब्जेक्ट को हटा बनाना।

फ्लैट सरफेसिस तथा सोलिड कास्टिंग।

मिश्र धातुओं की बनावट का ज्ञान रेत कास्टिंग रनर की प्रकृति।

लॉस्ट वेक्स प्रक्रिया–मूर्ति कला के निर्माण में हथियार से या इसके बिना प्रत्यक्ष वेक्स शेप बिल्डिंग से है। रनर को जोड़ तथा राइजर, स्परूस, सर्फेस के ऊपरी भाग की धातु ढलाई के लिए चिमनी का प्रयोग होता है। सांचा–ढॉचा–निमार्ण (मोल्ड मेकिंग) के लिए इन्डेजेनियस तथा इतालवी प्रक्रिया का उपयोग होता है। इन्डेजेनियस में स्थानीय, क्ले चावल छिलका, गाय–गोबर और उपादान।

उपादानों की श्रेणियॉ – वेस्ट मोल्डज, पीस मोल्ड्ज तथा मदर मोल्ड्ज, रबर मोल्डज, प्लास्टर आफ पेरिस में। कांस्य की अधिक प्रति”ात से धातु ढलाई (मेटल कास्टिंग) स्थाई आउटडोर प्लेसमेंट्स।

काई– रसायन प्रतिक्रियाओं द्वारा रंग प्रभाव प्राप्ति तथा सतही को सील करना तथा सुरक्षित रखना।

लोहा ढाल

रेत ढाल द्वारा लोहा ढाल

लोहे की छड़ को गर्म करना और चोट मारना ताकि इसका पूर्ववत् प्रभाव बना रहें

टेराकोटा– फायारड् क्ले–कड़ा आकार, हालो बिल्डिंग क्वाल पद्वति द्वारा–”ीट बीटिंग पद्वति तथा चक्र (व्हील) बिल्डिंग। होलो कास्टिंगस् पीस मोल्डज के उपयोग द्वारा शुद्व बीज़ वेक्स, रेसिन तथा पाराफीन मिश्रित उद्दे”य पूर्ति हेतु। वेक्स की प्रत्यक्ष कारगुजारी से भीतरी वेस्ट या पीस मोल्ड्स वांछित थिकनेस (पतली) कास्टिंग के लिए।

कुट्टी को तैयार किया जा सकता है ऐक्य या अन ऐक्य आधार पर अन्य विभिन्न सामग्रियों के मिश्रण से भी।

प्लास्टर ऑफ पेरिस–मूर्ति निर्माण के लिए आव”यक

प्रत्यक्ष प्रकिया

सॉचे में ढलना

मूर्ति ढाल

सीमेंट– रेत और रोड़ों के प्रकारों के मिश्रण से मूर्ति निर्माण का प्रत्यक्ष प्रयोग ह।

कास्टिंग इनसाइड वेस्ट या पीस मोल्ड्स

आउड डोर का विचार

ईटें– निमार्ण के लिए स्वतंत्र प्रयुक्त तथा उसकी पुननिर्माण (स्थापना रि–इन्फोर्समेंट) के लिए

फाइबर ग्लास कास्टिंग : आकार की कास्टिंग के लिए

ट्रांस्लुसेंट

कम भार एक वि"ोष गुण है

रेसिन कास्टिंग–पारद"ार्किता

वेल्डिंग–ब्रेजिंग भिन्न सम्भावनाएँ

छोटी और बड़ी मूर्तियों के लिए

लेनीअर तथा हालोड आकार

प्रकाश–लेजर बीम्स–प्रदीपन के लिए प्रयुक्त

आकार

प्रका"ा जक्सटापोज

लेहे छड़िया–स्वतंत्र प्रयुक्त प्रयोग तथा प्रत्यक्ष्ज्ञतः वेल्डिंग

छिपी शक्ति के लिए सामग्री की पुनस्थापना की तरह

बेकर सामग्री

चक्रवत् मेजे–विभिन्न ऊँचाइयॉ, चुराइयॉ

एक या अधिक इकाइयों का मिलन–उन्हीं का उपयोग या भिन्न सामग्री

कम्प्यूटर पर प्रत्यक्ष शेप मेकिंग मेल

दो डी काफी तरफ (2 डी)

शेप्स का विच्छेदन

वि"लेषण सुविधा के लिए

मूर्तिवत् बर्तन

अन्कंवें"ानल डिजाइन/तत्व में

क्रिया"ील

अक्रिया"ील बर्तन

मूर्तिवत् गहने

अर्द्व परम्परित

आधुनिक

आधुनिक वे"ाभूषण से मेल

मूर्तिवत् इण्ड्स्ट्रीअल डिजाइनिंग

इवेंट प्रबंधन मूर्तिकारों द्वारा यथा मंच (विवाह) कार्य

स्मारक मूर्तिकला, पारिवे"ाक मूर्तिकलाएँ (एन्वायरमेंट) क्षेत्र, समस्याएँ, विस्तार वि"लेषण, संकल्प तथा विकास।

स्मारक मूर्तिकलाएँ भारतीय मूर्तिकारों द्वारा : डी0 पी0 रायचौधरी, राम किंकर बैज, कुन्हीरामन, एम0 धरमानी, बी0एस0 कत्त, नागजी पटेल लतिका कट्ट आदि।

मूर्तिकला का इतिहास – पूर्व इतिहास, इजिप्"ान, ग्रीफ, हेल्लेनूस्टिक, रोमनेस्क, गौथिक, रिनैसांस, नियो क्लासिकल, भारतीय– मोहनजोदड़ो, इण्डस वैली, मौर्य, शुंग, सातवाहन, चालुक्य, राष्ट्रकुट, चोल, कु"ान, व्यक्तिवाद, आधुनिक मूर्तिकला।

पा”चात्य कला का दृढ़ प्रभाव, लोक कला ट्राइबल कला, क्लासिकल कला, ऐतिहासिक कला भारतीय आधुनिक समकालीन मूर्तिकला।

समकालीन मूर्तिकला, रूप का महत्व, उद्योगीकरण, विज्ञान तथा टेक्नौलॉजी, नवीन प्रयोगों–स्थापनाओं के प्रति रूचि।

मूर्तिकला के सौन्दर्य बोधात्मक कथ्यों में परिवर्तन, भारतीय मूर्तिकला में नये परिदृ”य, मूर्तिकला के क्षेत्र मे व्यापार समकालीन मूर्तिकारों की समस्याएँ–विभिन्न कलाओं का समकालीन अध्ययन।

भारतीय आधुनिक कला, ब्रिटि”ा कोलोनियल चित्रकला, बंगाल स्कूल, राजा रवि वर्मा, अकादमिक यथार्थवाद, प्रगतिवादी स्कूल, आन्दोलन रूप में कला की अनिवार्यता, शैलियॉ तथा स्कूल–भारतीय कला के, भारतीय समकालीन कला की समस्या।

यथा– अबनिन्द्रनाथ टैगोर, नंदलाल बोस, यामिनि राय, ए0 शेरगिल, रामकिंकर बैज, रवीन्द्रनाथ टैगोर, चुकताई, बिनोद बिहारी मखर्जी, प्रोदोष दासगुप्ता, निरोद मजुमदार, संखो चौधरी, एन0 एस0 बेंद्रे, धनराज भगत, प्रगतिवादी कलाकारों का समूह कलकत्ता तथा बम्बई के सुधोर ख”तागीर, चित्त प्रसाद, धुरंदर, ठाकुर सिंह, महात्रे।

पा”चात्य मूर्तिकला तथा चित्रकला तथा चित्रकला में प्रमुख शैली वैज्ञानिक प्रगति, इम्प्र”ानिज्म, एक्सप्रे”ानिज्म (अभिव्यक्तिवाद, अभिव्यंजनावाद), क्यूबिज्म, फ्यूचरिज्म, सुरेलिज्म, यूरोपीय, अमरीकी, तथा समकालीन कला। स्थानीय प्रभाव से इन्डेजीनस सामग्री का उपयोग– पल्सीकर, पणिकर, जे0 स्वामीनाथन, जानकीराम, सती”ा गुजराल, बीरेन डे, नागजी पटेल, मीरा मुखर्जी, जैराम पटेल, सु”ोन घाष, बलबीर एस0 कट्ट, वेद नायर महेन्द्र पंड्या, राघव कनेरिया आदि।

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
ललित कला एवं संगीत विभाग
शोध पात्रता परीक्षा पाठयक्रम (RET)
मंचकला
विशयगत पेपर – द्वितीय प्रश्न–पत्र

पारिभाशिक भाब्दावली – नाद, श्रुति, स्वर, ग्राम–मूर्छना, जाति, राग, ताल, तान, गमक, गांधर्व–गान, मार्ग–दे”ाी, गीति, गान, वर्ण, अलंकार, मेलोडी, हार्मनी, स्वर–सप्तक, स्वर–अन्तराल, संवाद, विवाद, उपस्वर, पा”चात्य एवं कर्नाटक पारिभाषिक शब्दावली एवं उनका वर्णन, स्वरित (तानपुरा), अल्पत्व–बहुत्व, आविर्भाव–तिरोभाव, उठान, पे”ाकार, कायदा, रेला, रंग, लग्गी, लड़ी, फ”ार्बिन्दी, ताल, लय, मात्रा, आवर्तन, विभाग, सः”ाब्द क्रिया, निः”ाब्द क्रिया, ठेका, सरल गत, आदि गत, चक्रदार गत, फरमाइ”ाी गत एवं अतिरिक्त प्रकार की गतें और कायदे, उपागं, भाषांग, गति, कृति, कीर्तन, जातिस्वर, पद, स्वरजाति, रागमालिका, तिल्लाना, न्यास, अं”ा, प्रास, यति, अनुप्रास, अलापना, नरवल संगीत एवं अतिरिक्त पारिभाषित शब्दावली, गीतिनाट्य, नृत्य–नाट्य, बैतालिक, वर्षा–मंगल, बसन्तोत्सव, गीतवितान, स्वर–वितान, आकरामात्रिक स्वर–लिपि, मसीतखानी, रजाखानी।

प्रयोगात्मक भास्त्र – रागो का विस्तृत एवं वि”लेषणात्मक अध्ययन, रागों का वर्गीकरण ग्राम–राग वर्गीकरण, मेल–राग वर्गीकरण, राग–रागिनी वर्गीकरण, थाट–राग वर्गीकरण एवं रागांग वर्गीकरण, रागों का समय–सिद्वान्त, भारतीय संगीत में मेलोडी एवं हार्मनी का प्रयोग, प्राचीन, मध्य तथा आधुनिक काल में श्रुतियों पर शुद्व–विकृत स्वरों का स्थापन।

हिन्दुस्तानी संगीत में प्रचलित तालों का विस्तृत ज्ञान, ताल के द”ा प्राणों एवं प्राचीन काल के मार्ग तथा दे”ाी तालों का ज्ञान, तिहाई निर्माण के मूल सिद्वान्त, चक्रदार गत, चक्रदार परन ताल के द”ा प्राणों के संदर्भ मं हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक तालों का विस्तृत अध्ययन, विभिन्न लयकारियॉ–दुगुन, तिगुन, चौगुन, आड़, कुआड़, बियाड़ एवं उनके क्रियात्मक प्रयोग सम्बन्धित विस्तृत जानकारी।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के तत्व कर्नाटक संगीत, पा”चात्य संगीत, विभिन्न प्रान्तों का संगीत, लोक संगीत।

गेय विधाएॅ तथा उनका कमिक विकास – प्रबन्ध, ध्रुपद, ख्याल, धमार, ठुमरी, टप्पा, तराना, चंतुरंग, त्रिवट, वृन्द–गान, वृन्द–वादन, जावली, कृति, तिल्लाना, आलाप, वर्णम् (पद–वर्णम् एवं तान–वर्णम्) पदम्, रागम्, तानम्, पल्लवी, गीत, वर्ण, स्वरजाति, कल्पित, संगीत, राग–मालिका, नेरावल, स्वर–कल्पना (मनोधर्म संगीत), तेवरम्, दिव्यप्रबन्धम्, तिरूप्रूगज। रवीन्द्र संगीत की मुख्य विधाएं, 'अकारमात्रिक' स्वरलिपि, देवनागरी लिपि का ज्ञान।

घराना और गायकी – हिन्दुस्तानी संगीत में घराना का उद्गम और विकास एवं पारम्परिक हिन्दुस्तानी संगीत की प्रगति तथा संरक्षण में घरानों का सहयोग। घराना पद्वति के गुण–दोष। कण्ठ, वादन और अवनद्य के प्रमुख घरानों का अध्ययन। वर्तमान संगीत में घरानों की आव"यकता तथा सम्भावनाएॅ। कर्नाटक संगीत की गायन और वादन की विभिन्न शैलियॉ और गुरू–"िाष्य परम्परा। रवीन्द्रनाथ टैगोर के सांगीतिक सृजन का सम्पूर्ण सर्वेक्षण, टैगोर की सांगीतिक रचनाओं की स्वरात्मक एवं लयात्मक विविधताएॅ (उनके निजी प्रयोगात्मक विविधताओं सहित)। टैगोर के परिवार का सांस्कृतिक वातावरण (पथूरीयाघाट एवं जोरासॉको, कलकत्ता) टैगोर संगीत की विषयपरक विविधताएॅ (पूजा, स्वदे"ा, प्रेम, प्रकृति, विचित्र अनुष्ठानिक)

भारतीय संगीत के भाास्त्रज्ञों का योगदान एवं उनकी भाास्त्रात्मक परम्परा – नारद, भरत, दत्तिल, मतंग, शारंगदेव, नान्यदेव एवं अन्य। लोचन, रामायण, पुंडरीक विट्ठल, सोमनाथ, दामोदर मिश्रा, अहोबल, ह्वदयनारायण देव, व्यंकटमखी, श्रीनिवास, पं0 भातखण्डे, पं0 डी0वी0 पलुस्कर, पं0 ओमकारनाथ ठाकूर, के0सी0डी0 बृहस्पति, डॉ0 प्रेमलता शर्मा एवं अन्य। अवनद्य वाद्य सम्बन्धित प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक ग्रंथों भरत नाट्य"ाास्त्र, संगीत समयसार, राधागोविन्द संगीत सार, मदरूल मौसीकी, भारतीय वाद्यों का इतिहास, संगीत शास्त्र, भारतीय संगीत में ताल और रूप, अभिनव ताल मंजरी, भारतीय संगीत वाद्य एवं अन्य ग्रंथ। प्राचीन मध्य एवं आधुनिक काल के अवनद्य वाद्यों के वि"ोषज्ञ जैसे, कुदऊ सिंह, भगवान दास, राजा छत्रपति सिंह, अनोखे लाल, अहमद जान थिरकवा, सामता प्रसाद, कि"ान महाराज एवं अन्य का योगदान।

टैगोर के गीतिनाट्य एवं नृत्य–नाट्य – मध्य एवं आधुनिककाल के कर्नाटक संगीत के प्रमुख शास्त्रज्ञों, रचनाकारों एवं मंचप्रद"ाक कलाकारों का योगदान। रामामात्य, व्यंकटमखी, त्यागराज, मुत्थूस्वामी दीक्षितर, श्याम शास्त्री, गोपाल कृष्ण भारती, प्रोफेसर सम्बामूर्ति, पापानसम् "िावन, बसन्त कुमारी, सुब्बूलक्ष्मी, रामरी, टी0एन0 कृष्णन एवं अन्य।

संगीत के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में – प्राचीन, मध्य एवं आधुनिककाल में हिन्दुस्तानी संगीत (कंठ, वादन तथा अवनद्य) कर्नाटक संगीत, रवीन्द्र संगीत का ऐतिहासिक विकास। पा"चात्य शास्त्रज्ञों का भारतीय संगीत में योगदान।

सौन्दर्य"ाास्त्र – सौन्दर्य"ाास्त्र का उद्गम, अभिव्यक्ति और परखः, सौन्दर्य"ाास्त्र के सिद्वान्त एवं भारतीय संगीत से सम्बन्ध। रस सिद्वान्त एवं भारतीय संगीत में इसका प्रयोग। हिन्दुस्तानी संगीत (कण्ठ, वादन तथा अवनद्व) कर्नाटक संगीत एवं रवीन्द्र संगीत का सांगीतिक सौन्दर्य शास्त्र तथा रस से सम्बन्ध। राग–रागिनी चित्रों, राग ध्यान इत्यादि के वि"ोष संदर्भ में ललितकलाओं के पारस्परिक सम्बन्ध का अध्ययन। रवीन्द्रनाथ टैगोर की सौन्दर्यबोधात्मक भारतीय एवं पा"चात् दा"ानिक चिन्तक एवं उनके विचार।

वाद्य और नृत्य – हिन्दुस्तानी, कर्नाटक तथा रवीन्द्र संगीत में प्रयुक्त होने वाले वाद्य (गायन, वादन तथा अवनद्य क्षेत्र में), उनकी उत्पत्ति, विकास तथा उनके सुप्रसिद्व कलाकार। तानपुरा तथा उसके उपस्वरों का महत्व। प्राचीन, मध्य तथा आधुनिक काल में हिन्दुस्तानी तथा कर्नाटक संगीत के वाद्यों वा वर्गीकरण। रवीन्द्र संगीत में प्रयुक्त होने वाले वाद्य। भारतीय नृत्यों की सामान्य जानकारी : कत्थक, भरतनाट्यम, कुचीपुड़ी, ओडीसी, कथाकलि आदि।

लोक संगीत – भारतीय संगीत पर लोक संगीत का प्रभाव। लोक संगीत का रागों में शैलीगत परिवर्तन। रवीन्द्र संगीत, हिन्दुस्तानी तथा कर्नाटक संगीत की सुप्रसिद्व लोक धुनें एवं लोक नृत्य यथा : बाउल, भटियाली, लावनी, गरबा, कजरी, चैती, भॉड, भॉगड़ा, गिद्दा, घूंमर, स्वॉग, पण्डवानी, आमार प्राण मानुष आछे प्राण, आमार शोनार बांगला, कीर्तन, सारी, राय बे"ा, झूमर, करकट्टम, कवाड़ीअट्म, विल्लुपोट्टु, मयण्डीमेलम् तथा अन्य प्रसिद्व लोक विधाएॅं। हिन्दुस्तानी लोक संगीत, कर्नाटक लोक गीत अथवा दक्षिणी लोक संगीत तथा रवीन्द्र संगीत अथवा बंगाल के लोक संगीत में एक दूसरे को प्रभावित करने वाले कारकों एवं तत्वों का वि"लेषण। भारत के विभिन्न प्रान्तों के लोक संगीत का सामान्य अध्ययन : उत्तर प्रदे"ा, राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, बंगाल आदि तथा पूर्वोत्तर एवं दक्षिणी भारत के लोक संगीत।

संगीत ि"ाक्षण प्रणाली – गुरू–ि"ाष्य परम्परा, संगीत सम्प्रदाय प्रदर्"ानी, हिन्दुस्तानी, कर्नाटक तथा रवीन्द्र संगीत के सन्दर्भ में विद्यालयी संगीत ि"ाक्षण। हिन्दुस्तानी, कर्नाटक तथा रवीन्द संगीत ि"ाक्षण के सन्दर्भ में इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों एवं ि"ाक्षण में प्रयुक्त की जाने वाली सहायक सामग्री की प्रयोगात्मकता। हिन्दुस्तानी, कर्नाटक तथा रवीन्द्र संगीत में संगीतात्मक शोध के अन्तर्गत सांस्कृतिक पत्रकारिता, संक्षेपिका, सामग्री संकलन, क्षेत्रीय सांगीतिक कार्य एवं प्राजेक्ट रिपोर्ट लेखन आदि। शास्त्रात्मक तथा मौखिक परम्परा के संगीत में अन्तःसम्बन्ध।

Section B खण्ड–ब

<u>दृश्यकला</u>

UNIT - I

भारतीय चित्रकला (पेंटिंग)

अजन्ता, बाघ और म्यूरल परम्परा, पूर्व ऐतिहासिक आकारगत और शैलीपरक पक्ष, पाण्डुलिपि, चित्रकला (पूर्व भारतीय एवं दक्षिण भारतीय), सुलतानी (माण्डु), चौरापंचसिका शैली तथा अन्य पूर्व मुगल शैली, मुगल (अकबर से शाहजहॉ), राजस्थानी (मेवाड़, बूंदी, कोटा, बीकानेर, जयपुर, कि”नगढ़, आदि), मालवा, पहाड़ी (बसोहली, गुलेर, कांगड़ा) तथा देक्कानी (अहमद नगर, बीजापुर तथा गोलकुंडा) शैली आदि।

यूरोपीय कला (वास्तुकला, मूर्तिकला तथा चित्रकला)

पूर्व–इतिहास कला (फ्रांस और स्पेन), क्रेटन, ग्रीक, रोमन, इतरूइसकन, प्रारम्भिक क्रिसूचियन, बाइजेन्टिन, गोथिक, रेनैसांस, मानेरिस्ट, बरोक्यू, नियो–क्लासिज्म, रोमांटिसिज्म, रीयलिज्म, इम्प्रे”ाज्म, उत्तर (पोस्ट) इम्प्रे”ाज्म, सिम्बोलिज्म, फौतिज्म, क्यूबिज्म, एक्सप्रे”यनिज्म तथा अन्य एबस्ट्रेक्ट ट्रेंडस (आयाम) फयूचरिज्म, दादावाद, सर्रेलिज्म, एबस्ट्रक्ट एक्सप्रे”ानलिज्म, ओपी, पॉप, मिनीनिमल, नियोफिग्रे”ान तथा उत्तर–आधुनिक काल में विभिन्न कला–विकास (इतालियन ट्रांसवेंतगर्डे, जर्मन नियोएक्प्रे”ानिज्म, हैप्पनिंग, इंसटाले”ान (स्थापना), फेमिनिस्ट और गे कला।)

प्राचीन कला और वास्तुकला पूर्व के निकट (ऐन्शियट नीअर इस्ट)

इजिप्सिअन मेसोपोटामीयन सुमेरियन, अक्कादिअन, अस्सेरियन, अचेमानिद मिनोअन तथा ससानिअन, संस्कृतियों की कला।

पूर्व देश (ओरिएंट) की कला तथा वास्तुकला

दूर ईस्टन की कला (चीनी तथा जापानी), इस्लामिक, केन्द्रीय एिं'ाया, नेपाल, तिब्बत, श्रीलंका, कम्बोदिया, जावा, स्याम तथा बमा।

आधुनिक भारतीय कला

कम्पनी स्कूल, बाजार चित्रकला, ब्रिटि"ा कला स्कूल, कालीघाट पेंटिंग (चित्रकला), राजा रवि वर्मा तथा इनके अनुयायी नियो बंगाल स्कूल (रीवाइवलइज्म तथा प्रारम्भिक आधुनिकतावादी) : अबनिन्द्र नाथ टैगोर तथा इनके ि"ाष्य, नंदलाल बोस, बिनोद बिहारी मख़र्जी, रामकिंकर बैज, रवीन्द्र नाथ टैगोर, गगनेन्द्रनाथ टैगोर, जामिनी राय तथा अन्य। कला ि"ाक्षा में शान्तिनिकेतन की भूमिका।

अकादमिक/प्रोफे"ानल वास्तुकार, चित्रकार, महात्रे तालिम, डी0 पी0 राय चौधरी, धुरन्दर, हेमन मजूमदार, ठाकुर सिंह आदि। प्रारम्भिक आधुनिकतावादी : अमृता शेरगिल, करमारकर, जार्ज क्येत। कला 1940 तथा 1950 में : बंगाल फेमिन तथा कलाकार (सोमनाथ होर, चित्त प्रसाद, जैनल अबेदीन, गोबर्धन अ"ा, सुधीर खस्तगीर), कलकत्ता, मद्रास, बम्बई तथा दिल्ली में प्रगतिवादी कला आन्दोलन। अन्तर्राष्ट्रीय आधुनिकवादी तथा कलाकार : एफ0 एन0 सौजा, प्रदोष दास गुप्त, के0 सी0 एस0 पनिकर, बी0 सी0 सान्याल, दिनकर कौि"ाक, निरोद मजूमदार, परितोष सेन, एम0 एफ0 हुसैन, अकबर पद्यासी, राजकुमार तथा अन्य। स्वतंत्र कलाकार : एन0 एस0 बेंद्रे, के0 के0 हेबर, शंखों चौधुरी, कृष्णा रेड्डी, धनराज भगत, वाई0 के0 शुक्ल, पीलू पूचखानवाला, वी0 एस0 गायतोंडे, सन्थनराज, डविअरवाला तथा अन्य।

कला में 1960 तथा 70 में चित्रकला, वास्तुकला, म्यूरल तथा प्रिंट मेकिंग में इनडीजीनिस ट्रेंडस (आयाम) परिदृ"य– के0 जी0 सुब्रामनियम्, के0 सी0 एस0 पणिकर (चोलामंडल कलाकार (गॉव) रेड्डप्पा नायडू, एस0 बी0 पल्सीकर, जानकी राम, मीरा मुखर्जी, ज्योति भट्ट, जे0 स्वामिनाथन, नियो तांत्रिक कला, आदि।

चित्र–मूर्ति सम्बन्धी (फिग्रेटिव) – विवरणात्मक प्रवृत्ति 1960 से : विका"ा भट्टाचार्य, गणे"ा पाइन, ए0 रामाचंद्रन, आर0 बी0 भास्करन, लक्ष्मण गाउड, जोगन चौधरी, भूपेन खक्खर, अंजोले इला मेनन, अर्पिता सिंह, गोगी सरोज पाल, अर्पणा कौर, विवान सुंदरम् तथा अन्य।

1960 से अमूर्तीकरण (एब्स्ट्रक्शन) की प्रवृत्ति : राधव कनेरिया, जयराम पटेल, पी0 बार्बे, राम कुमार, एल0 मुत्रूस्वामी, पी0वी0 कोल्ते, जगमोहन चोपड़ा, बलवीर सिंह कत्त, नागजी पटेल। स्थापना (इन्स्टाले"ान), मल्टी मीडिया, परफार्मेटिव, हैपेनिंग कला का विकास–नलिनी मलानी, वेद नायर, विवान सुन्दरम् तथा अन्य।

ट्राइबल, फोक (लोक) तथा पापुलर कला (डिज़ाइन तथा फंक्शनल कला इसमें सम्मिलित हैं)

अफ्रीकन, औ"ायनिक, नार्थ वेस्ट कोस्ट अमेरिकन, मेक्सिकन, इण्डियन (भारतीय), साउथ ईस्ट एि"ाया कला।

भारत : पट चित्रकला (राजस्थान, बंगाल, उड़ीसा), मधुबनी, वरली, पिथोरो चित्रकला। डोकरा ब्रोन्जेस, टेराकोटा होर्सिस (गुजरात, यू0 पी0, बंगाल, एम0 पी0, तमिलनाडु) वुड कारविंग, (कोंडापल्लि, कर्नाटक (भुट), बंगाल, एम0 पी0) लेदर पॉपेट्स (ए0 पी0, कर्नाटक)। भारतीय परम्परित तथा आधुनिक डिजाइन तथा फंक्"ानल कलाएँ : टेक्सटाइल्स : बनारस, कांचपुरम, गुजरात ब्रोकेड, बाजुचरी, ढाका मलमल, पैथानी, कट्कि तथा नये इस्टर्न प्रदे"ा की टेक्सटाइलस्। टाई एण्ड डाई फेबरिक्स, एम्ब्राडेरीज (फुलकारी, चम्बा रूमाल, कंधा) मेटलवेयर (बिडरी, रपाउसे, एनामेलिंग) जेड, बीड्स, ज्वेलरी तथा अन्य।

आरेखन और चित्रकला (ड्राइंग–पेंटिंग)

चित्रकला (पेंटिंग) के मूलाधार, प्रधान तत्व–बोध (ज्ञान), परस्पेक्टिव बैल्यूज (मूल्य), दृ"य (विज्युअल) सिद्वान्त, रूप, स्पेस, इल्लूज़्म, परिकल्पना। विचारों के विकास की कालक्रम बद्वता। दृ"य वास्तविकता, कंसेप्चुअल वास्तविकता (रीयलटी), ट्रेडी"ानल (परम्परित) तथा क्रम"ाः (ग्रेजुअल) कला विकास, विभिन्न दृ"य–कलाओं की वि"ािष्टता (वि"ाषज्ञता) के वैचारिक तत्वों से युक्त के आधार पर।

मीडिया तथा सामग्री तथा उनका प्रयोग, स्केचिंग तथा ड्राइंग (आरेखन) सामग्री, उपयोग, तैल चित्र (आयल पेंटिंग)– अल्ला प्राइमा तथा प्राचीन मास्टर प्रक्रिया, ग्लेज़िंग तथा स्कम्बलिंग, प्राइमिंग ऑफ कैन्वास, विभिन्न प्रकार के तेल, ब्रु"ा आदि। टेम्परा तथा गाउचे तथा उनके प्रयोग चित्रकला में– परम्परित तथा अपरम्परित कलावा"ा। कागज और सिल्क धोने की पद्वति। एक्राइलिक, पेस्टल, मिश्रित माध्यम, जल रंग म्यूरल तथा म्यूरल तकनीक–फ्रेस्को–सेक्को तथा फ्रेस्को बूनो, अजन्ता और विभिन्न आधुनिक मीडिया, रिलोफ तथा मिश्रित मीडिया म्यूरल में।

कोलाज, एन्कास्टिक वेक्स की तकनीक।

चित्रकला में सहयोग : केन्वास, पेपर, वुड, सिल्क आदि की तकनीक।

चित्रकला के प्रकार, ओपेन एयर पेंटिंग्स, पोर्ट्रेट पेंटिंग, हेड तथा फुल फिगर्स एवं मेल तथा फीमेल का अध्ययन। लैंडस्केप पेंटिंग, पेट्रोनाइज़ड कला, चित्रकलाएँ विभिन्न कला आन्दोलनों में स्टिल लाइफ, थिंमेटिक, एब्स्ट्रक्ट आदि।

बनावट के सिद्वान्त, कलाकारों के निजी विचारों (दृष्टिकोणों) का प्रतिच्छाया–प्रभाव–प्रस्तुति, विचार (कंसेप्ट) का विकास। रचनात्मक चित्रकला की प्रक्रिया। सौन्दर्यात्मिक और दा"ानिक आधार पर विचारों की अभिव्यक्ति। कलात्मक अभिव्यक्ति विभिन्न सामाजिक एवं संरचनात्मक परिवर्तनों के बीच। कला तथा परिवर्तन।

तकनीकों, रंगों, रंग–सिद्वान्त का उपयोग– कला–गतिविधियों में रंग–सिद्वान्त का उपयोग–प्रयोग, रंग–ऐक्य, परम्परित रंग–उपयोग तथा रंग–उपयोग कारणयुक्त।

रंग–तैयारी, संरचनात्मक, तकनीकी पक्ष पिग्मेंट का। विभिन्न परम्पराओं के साधन तथा प्रभाव। कलात्मक मूल्य की समझ और अध्ययन, रूप–संरचना, आकार–"ोप्स, प्लान्स (योजनाएँ) खण्ड तथा पूर्णता में, उद्दे"य तथा दि"ाा आयामों के दो–तीन की सही मसझ।

फाइन आर्ट्स/विजुअल आर्ट में सौन्दर्य बोध, शास्त्र के अध्ययन की प्रासंगिकता। भारतीय संस्कृति में प्रारम्भिक दा"ानिक विचार। समाज में कला के काया की प्रकृति तथा प्रस्तुति। रस–संकल्प, 'ाड़ग, ध्वनि, अलंकार आदि परम्परित कला में। कला तथा सुन्दरता का संकल्प, विचार, कल्पना, इन्टयु"ान रूप तथा कथ्य– सबलाइम, सहानुभूति, एमपेथी, क्रियेटिविटी, ऐलग्री, मिथक, द"ान ओर सौन्दर्यात्मक विचार– कॉट, हीगेल आदि की।

इतिहास–पूर्व भारतीय चित्रकला, क्लासिकल भारतीय चित्रकलाएँ, म्यूरल (अजन्ता, बाघ) तथा बाद की म्यूरल परम्पराएँ। पाण्डुलिपि चित्रकला, मिनीयेचर पेंटिंग, फोक तथा ट्राइबल चित्रकलाएँ।

चित्रकला का कम्पनी स्कूल

राजा रवि वर्मा, बंगाली स्कूल, अबनिंद्र नाथ तथा उसके अनुयायी (क्षितेन्द्र नाथ मजूमदार, समरेन्द्रनाथ गुप्त, के0 वेंकेटप्पा, अब्दुल रहमान चुगताई, असित कुमार हाल्दार, नंदलाल, आदि)।

नन्दलाल तथा उसके ि"ाष्य (राम किंकर, बिनोद बिहारी, धीरेन्द्र कृष्ण देव वर्मा, आदि)

अमृता शेरगिल, अकादमिक यथार्थवाद, कलकत्ता ग्रुप (परितोष सेन, गोबर्धन आ”ा, निरोद मजूमदार, प्रदूष दासगुप्ता, हेमन्त मिश्र, आदि।)

समकालीन भारतीय कला में प्रमुख प्रवृत्तियॉ 1947 से

पा”चात्य चित्रकला में प्रमुख पड़ाव, ग्रीको–रोमन, बाइजेंटिन, गोथिक, रिनैसांस (रिनैसांस की पृष्ठभूमि, मानववाद तथा उसके सुझाव तथा निजी शैली के प्रारम्भिक विकास में– रिनैसांस तथा हाई रिनैसांस) वारोक तथा रोकोको (संकल्प तथा कुछ महत्वपूर्ण कलाकारों की गतिविधियों की पृष्ठभूमि में)

नियो क्लासिज्म, रोमांटिसिज्म, नियो रियलिज्म, इन्प्रे”ानिज्म, उत्तर इम्प्रे”ानिज्म, क्यूबिज्म, फौविज्म, दादाबाद, सुरलिज्म, एब्स्ट्रक्ट एक्प्रे”ानिज्म, ऑप, पॉप, नियो–फिग्रे”ान, कला उत्तर आधुनिक युग में।

दृ”य संचार (विज्यूअल कम्प्युनिके”ान) में प्रयोगिक कला के महत्व को विभिन्न मीडिया, कंज्यूमर तथा प्रोडयूसर के सम्बन्ध में स्पष्ट करना।

विज्ञापन डिजाईन/ग्राफिक डिजाईन के सभी तत्वों की समझ–यथा टाइपोग्राफी तथा कैलीग्राफी (हेड लाइन, कॉपी), फोटोग्राफी, निमोनिक्स व्याख्या विस्तार, लोगो तथा सिम्बल, पंचलाइन/बेस लाइन/स्लोगन आदि।

कंवेन्”ानल एनिमे”ान (सेल एनिमे”ान) तथा आधुनिक एनिमे”ान (कम्प्यूटर एनिमे”ान 2 डी तथा 3 डी) एप्लीके”ान ऑफ कम्प्यूटर ग्राफिक वि”ोष प्रभाव हेतु।

विज्युअलाइजे”ान (मानस द”ीन)

विज्युअलाइजे”ान के शोध साधन, सूचना सामग्री का संग्रह और विचार, यू0 एस0 पी0 का चयन, कंसेप्ट (समझ) का विकास, मीडिया चयन में अन्तिम निर्णय।

UNIT - II
आउटडोर विज्ञापन

संचार में इसका महत्व। आउट डोर विज्ञापन के विभिन्न प्रकार, दूसरे मीडिया पर इसका प्रभाव। विज्ञापन नीति तथा सेंसरिंग आउट डोर मीडिया।

कैम्पेन विज्ञापन अभियान – प्रोडक्ट (पैकेज डिजाइन कन्टेनर के सरफेस पर, शुरू के लिए) कारपोरेट/सरकार तथा सामाजिक जागृति। द"ाक को दृष्टि में रखते हुए मीडिया के लिए सुझाव–दृष्टि–समझ। उपलब्ध मीडिया के नाम। मीडिया में नवीनता। नई तकनीक (कम्प्यूटर, डिजिटल प्रिंटर्स आदि)। टी0 वी0 ग्राफिक, मल्टिमीडिया प्रस्तुति, वेब–पेज डिजाइनिंग (रूपांकन) तथा सभी सॉफवेयर की समझ (पेजमेकर, कोरेल ड्रा, फोटो"ााप, फ्रीहैण्ड, ड्रीम वेवर, 3–डी स्टूडियो, आदि) इण्टरनेट, उसका प्रयोग विज्ञापन प्रोडक्ट्स के रूप में तथा सर्विसेस, नेट, मार्केटिंग।

विज्ञापन एजेंसियों का संगठन

विज्ञापन प्रबंध का अध्ययन, स्टूडियो बनाना, एक ग्राफिक डिजाइनर का उत्तरदायित्व तथा महत्व। कला–निर्दे"ाक (डायरेक्टर), विजुअलाइजर, क्रियेटिव हेड, सर्विस विभाग तथा कापी लेखक। क्रियेटिव डायरेक्टर, क्रियेटिव हेड तथा कापी लेखक कन्सेप्ट को सही रूप में कार्य रूप प्रदान करने के लिए उनका अन्तर्सम्बन्ध विकास। आधुनिक स्टूडियो वर्तमान सेनारिओ में– कम्प्यूटर, प्रिंटर, तथा स्केनर, आदि।

अन्य कलाओं से अन्तर्सम्बन्ध यथा मूर्तिकार, पेंटर, सेट डिजाइनर तथा इवेंट प्रबन्धन एजेंसियॉं।

विज्ञापन का प्रारम्भिक सभ्यताओं का इतिहास। गति"ाील पक्षों की शोध। प्रिंटिंग प्रोसेस का विकास : लेटर–प्रेस, ऑफसेट, ग्रेव्यूर, सिल्क–स्क्रीन, इम्बोसिंग, थरमोग्राफी, आदि।

कम्प्यूटर तथा उसका दृ"य प्रभाव में नवीनता लाने का महत्व। विज्ञापन में मार्किट शोध का महत्व। भारतीय विज्ञापन का इतिहास और विभिन्न मीडिया। भारत में प्रिंटिंग का इतिहास। प्रिंट–मीडिया बनाम इलेक्ट्रानिक मीडिया।

विज्ञापन का भारत में भविष्य। भारतीय विज्ञापन में मल्टिने"ानलों का प्रवे"ा। टॉप ग्रेड विज्ञापन एजेंसिया यथा एच0 टी0 ए0 लिंटॉस, मुद्रा, ओ तथा एम आदि तथा उनकी पहॅुच।

मुद्रण ग्राफिक आर्ट (प्रिंट मेकिंग) छापाकला का संक्षिप्त इतिहास

मुद्रण (प्रिंटिंग मेकिंग) के प्रमुख तत्वों का ज्ञान (1) सतही (सर्फेस) रिलीफ एवं प्लेनोग्राफी (समतल) (2) इन्टेग्लियो, (3) स्टेन्सिल, (4) अन्य माध्यम : कम्प्यूटर ग्राफिक्स, कागज बनाना, आयामी मुद्रण (डायमेन्”ानल प्रिन्ट्स), कोलोग्राफी, कोलाग्राफी, चिनकोले, मोनोप्रिन्ट/विलक्षण मुद्रण (यूनीक प्रिन्ट)

सतह (सर्फेस) : मुक्ति (रिलीफ)

आविश्कार

माध्यम काष्ठ मीडिया, काष्ठ नक्का”ाी (वुड एंग्रेविंग), काष्ठ खुदाई (सुदूर पूर्व), लिनो खुदाई और लिनो उत्कीर्णन (एचिंग)

सामग्री : काष्ठ और रबर कारपेट (लिनोलियम)

यंत्र – रसायन, स्याही, मुद्रण म”ाीन

डिजाइन बनाने की समझ (1) प्रका”ा से अंधेरा

मुद्रण पद्वतियॉ : (1) सिंगल ब्लाक मल्टी कलर प्रिंटिंग, (2) मल्टी ब्लॉक मल्टी कलर प्रिंटिंग।

सतह (सर्फेस) : लिथोग्राफी (अ”म मुद्रण : ि”ालामुद्रण)

माध्यम : आविष्कार ि”ालामुद्रण, ऑफसेट मुद्रण, ओलियोग्राफ

सामग्री और साधन यंत्र : पत्थर, प्लेट, टूल्स, रसायन (केमिकल), स्याही, प्रेस–फोटोग्राफ, एनजार्जारस।

तकनीक : पिसना (ग्राईडिंग), ग्रेनिंग, इमेज मेकिंग : ड्राइंग, फोटो–ट्रॉन्सफर, लिथो–एंग्रेविंग

टुलस या होने पेन्सिल/प्रतिलोप/अनुलोप (रिवर्स/री–रिवर्स) तकनीक इत्यादि।

उत्कीर्णन (एचिंग), पंजीकरण, मुद्रण (सिंगल ब्लॉक मल्टी कलर तथा मल्टी ब्लॉक मल्टी कलर

पद्वतियॉ)

ऑफसेट प्रिंटिंग (मुद्रण) : आविष्कार

प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रक्रिया

रूप बनाना (इमेज मेकिंग) : हस्त–रेखा कला, फोटो (छाया चित्र) रूपान्तरण

सामग्री तथा साधन–यंत्र : स्याही, रसायन, प्रेस (मुद्रण यंत्र)

मुद्रण पद्वति– प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष चित्रात्मक (पिक्टोरिअल) और आकारिक वि"ाषताऍं (फार्मल क्वालिटीज)–f"ालामुद्रण और ऑफसेट की।

इन्टेग्लियो (उत्कीर्ण आकृति)

आविश्कार

माध्यम–ड्राई पाइंट, इन्ग्रेविंग, मेजोटिंट, एचिंग, काष्ठ उत्कीर्ण आकृति (इन्टेग्लियो), वेस्कासिटी

सामग्री– प्लेट्स : मैटल–धातु, अक्रालिक, काष्ठ और सनमाइका, इत्यादि : रसायन–टूल्स : प्लेट मेकिंग, इमेज़ मेकिंग, हस्तचालित (मैनुअल) और फोटो रूपान्तरण प्रक्रिया।

सादृ"य रूप परिकल्पना (एप्रोच टू डिजाइन)

प्रका"ा से अंधेरा (लाइट टू डार्क)

अंधेरे से प्रका"ा (डार्क टू लाइट)

मुद्रण में इन्टेग्लियो की विभिन्न तकनीकों की वि""ोशताऍं

स्टेन्सिल– (1)हस्तकटाई स्टेन्सिल, (2) सिल्क स्क्रीन (सेरीग्राफी)।

(1) हस्त कटाई स्टेंसिल : पद्वति और सामग्री

(2) सिल्क स्क्रीन (सेरिग्राफी), सामग्री (सरीन), सिल्क, वोल्टिग क्लाप, नाईलोन और पॉलिस्टर कपड़ा

यंत्र स्क्वीजी, फ्रेम, एक्सपोजिंग टेबल, मुद्रण मेज (प्रिन्टिंग टेबल)

रसायन : स्याही तथा अन्य यंत्र साधन

मुद्रण पद्वतियॉ : (1) हस्त चालित, (2) यंत्र चालित।

कम्प्यूटर ग्राफिक–(1) प्रत्यक्ष मुद्रण यंत्र द्वारा, (2) अप्रत्यक्ष प्रयोग (कम्प्यूटर जेनरेटेड इमेजेस) मेड टू ट्रांसफर आन अदर प्रिंटमेकिंग मीडिया।

कागज बनाना आयामी प्रिंट

सामग्री

म"ीने और टूल्स (यंत्र–औजार), बीटर, ट्रे इत्यादि।

रसायन और रंग

तकनीक

फोटोग्राफ/कोलोग्राफ–सामग्री–ब्लॉक मेकिंग–प्रिंट पद्वतियॉ– (1) इन्टैलियो, (2) रिलीफ

चिनकोले–तकनीक

मोनोप्रिंट–विभिन्न तकनीकें

मिश्रित–मीडिया, मल्टी मीडिया तथा अन्य

मुद्रण का इतिहास

एि"ाया और यूरोप, विभिन्न मीडिया पद्वितियों का आविष्कार और प्रस्तुतियॉ, मुद्रण संचारित (सम्प्रेषित) मीडिया– सम्पर्क का माध्यम, 19वीं से 20वीं शताब्दी में पुस्तक प्रका"ान, विज्ञापन का प्रभाव, मुद्रण–छपाई चित्र कार्य"ाालाएँ।

व्यक्ति कलाकार का योगदान—डयूरर, रेम्ब्रांट, होगार्थ, गोया, गंगुइन, डेगास, लौतरी, डौमिरे, जर्मन अभिव्यक्ति वादी (एक्सप्रेस्तिस्ट्स)—(कथे, कालविटज, नोल्डे, हेकेल, ग्रोज, मुंक आदि) पिकासो, पोप तथा फिग्रेटिव कलाकार (रो"ानबर्ग, लिचेस्टिन, जिमडाइन), डेविड हॉकनी, कृष्ण रेड्डी, पिटर, डौग्लीस, स्टानली, जॉन।

जापानी बुडकट्स तथा ओक्0 यू0 इ0 स्कूल के महत्वपूर्ण मास्टर—यथा होकुराई, हिरोसिगे, उत्तमरो।

भारतीय प्रिंट मेकिंग

19वीं की मध्य भाताब्दी में प्रिंटमेकिंग

20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में बंगाल में प्रिंटमेकिंग— बटतला प्रिंटिंग तथा कालीघाट

व्यक्ति कलाकार : राजा रवि वर्मा, विचित्र क्लब के सदस्य, मुकुल दे, गगनेन्द्रनाथ टैगोर इत्यादि, शान्ति निकेतन स्कूल, नन्दलाल, विनोद बिहारी मुखर्जी, राम किंकर, वि"वरूप बोस, रमण चक्रवर्ती, हरेन दास, सोमनाथ होर, चित्तप्रसाद, ज्योति भट्ट, कॅवल कृष्ण, वाई0 के0 शुक्ल, बसन्त पर्व, जगमोहन चोपड़ा, परमजीत सिंह, ललिता लाजमी, नैना दलाल, लक्ष्मा गौड़—आर0बी0 भास्करण, पल्लानी अप्पन, सनत कर, लालू प्रसाद शाओ, अमिताभ बैनर्जी—देवराज दाकोजी, भूपेन खकर, वामन चिंचोलकर, पाल कोली, दीपक बैनर्जी, जय जरोटियॉ, प्रयाग झा, रीनी धूमल, अनुपम सूद, जयंत पारिख श्याम शर्मा आदि।

उच्च स्तरीय मुद्रण (प्रिंटर्स) तकनीकी और सौन्दर्यबोधक दृष्टि से मानदण्डों के आधार—मुद्रण छायाचित्र की प्रामाणिकता की परम्परित पहचान— हस्ताक्षर, संस्करण, कलाकार—प्रमाण (आर्टिस्ट्स प्रफुस) आदि। प्रिंट मेकिंग में समकालीन से सम्बन्ध विषय (यांत्रिक पुनः प्रस्तुति, कम्प्यूटर ग्राफिक, विज्ञापन के प्रभाव, पॉप कलाकार, प्रिंट मेकिंग कार्य"ाालाएँ आदि।)

UNIT – III

भारतीय मूर्ति कला (स्कल्पचर)

इण्डस वैली के मूर्तिकला के आकारगत एवं शैलीपरक पक्ष–मौर्य, शुंग, सतवाहन, कु"ाान (मथुरा और गंधार), गुप्त (बौद्व, ब्राह्मण और जैन), चालुक्य, गुर्जर प्रतिहार, पल्लव, चोल, राष्ट्रकुट, होयसला, ककत्तिया, पल–सेना, ओड़ीसन, सोलंकी तथा परमार काल आदि।

भारतीय वास्तुकला (आर्कीटेक्चर)

इण्डस वैली में वास्तुकला के आकारगत तथा शैली परक पक्ष, स्तुप (भरहूत, सांची, अमरावती, सारनाथ), के गुफा मंदिर (भ़ज, कार्ले, अजन्ता, नासिक, लोमस ऋषि, कन्हेरी, आदि) गुप्त (उदयगिरि देवगृह, नचना आदि), चालुक्य (बदामी, एहोले, पट्टदाकल, आदि) पल्लव (महाबलीपुरम, कांचिपुरम, आदि) राष्ट्रकुट (एलोरा) गुर्जर प्रतिहार, सैन्धव–मैतर्का, चन्देल (खजुराहो), उड़ीसा (भुवने"वर, कोणार्क) चोल (तंजोर तथा गंगोआकोंडा, चोलापुरम्, दरासुरम्, आदि) हायसला (बेलूर, हलीविड, आदि), ककतिया, कल्याण, चालुक्य, सोलंकी, (मोधेरा, रानी की वाब, इत्यादि) परमार, नायुक तथा विजय नगर (हमपि लेपाक्षी) मुस्लिम वास्तुकला, सुलतानी तथा मुगल माण्डू दिल्ली, आगरा, फतेहपुर सीकरी आदि।

भारतीय प्रतिमा भास्त्र (आइक्नोग्राफी)

प्राकालीन प्रतिमा पूजा (इमेज वर्"ीप), विष्णु, ि"ाव तथा शक्ति कल्ट का विकास तथा उनके प्रतिमा शास्त्र (आइक्नोग्राफी) के रूप, सप्त–मात्रिक, लक्ष्मी, सूर्य, यक्ष, गणे"ा तथा कार्तिकेय। हिन्दू मंदिर तथा मूर्ति विज्ञान (अ"त) (दिक्पलस, नदी देवियॉ, आदि) बौद्व विवरण– वर्णन (जातक गाथाएँ तथा बद्व का जीवन) मूल तथा बुद्व के इमेज़ (प्रतिमा) का विकास तथा बोधिसत्व (अवलोकीते"वर, मैत्रेय, अ"तमहाभायातरण अवलोकिते"वर, मंजूश्री (मंजूश्री)) तारा और कुबेर/पंचिका। तीर्थकरों का प्रतिमा विज्ञान (ऋष्भनाथ, महावीर, पा"र्वनाथ, नेमिनाथ), बाहुबलि, जैन यक्ष तथा यक्षि, अम्बिका, साइनेरेटिक परिकल्पनाएँ (इमेजिज) आदि। मध्य कालीन चित्रकला में वर्णन (इमेजिज)– गीत–गोविन्द, रामायण, लौर्चंद, रागमाला, रसमंजरी, कल्पसूत्र तथा कल्काचार्य कथा, आदि।

मूर्तिकला (स्कल्पचर)

मूर्तिकला : कल के रूप में प्रमुख तत्व–ज्ञान, मेकिंग–बेसिक कंसेप्ट्स (संकल्प), दृ"य संकल्प, सही ज्ञान, मूर्तिकला के मूलाधार, फिग्रेटिव तथा नान–फिग्रेटिव मूर्तिकला।

माध्यम (मीडिया) और सामग्री (मिट्रिअल्स) : काष्ठ (वुड)–काष्ठ के विभिन्न प्रकार– सख्त (हार्ड) तथा नरम (साफ्ट) फाइबर्स में ब्लैक इबोनी टू साफ्ट (फॉर वेराइटी) प्रका"ा रंग युक्त काष्ठ (कम्प्रेस्ड फिब्स) रफ तथा स्मूथ ग्रेन पर आधारित यथा इबोनी, शी"ाम, टीक, हल्डू आदि।

पत्थर (स्टोन्स) : मूर्तिकला यंत्र और कर्व पत्थरों की पहचान में शताब्दियॉ लगी। इग्रीअस राक्स, बोलकेनिक राक्स है, जिनसे मूर्तिकला बहुरंगी ग्रानिटेस और बसल्ट हुई।

सेडीमेन्टरी राक्स यथा सैंड पत्थर और लाइम पत्थर। शताब्दियों में लेअरस के आकार में बना।

लाइम पत्थर : काटने में नरम पर संरचनात्मक (टेक्स्चर्ड)

मेटामोरफिक : सेडिमेन्टरी तथा इग्रीयस– जब गर्म किया गया तथा दबाया गया– सख्त हुआ पर ट्रांस्लूसेंट भी कभी–कभी तथा मार्बल–ग्रीक तथा रोमन काल से प्रसिद्व हुआ तथा चुनौती पूर्ण ढंग सुंदर आकार के मास्टर पीस तैयारी में निरन्तर रहा, जो रिनैसांस काल में अपनी तरह का निराला था– बारोक में इसका उपयोग वि"ाष्ट था। मिकेलंजलो डेविड तथा बेरनिनी फ्लोइंग ड्रापेरी तथा रोदिन किस तथा प"चात् भारत में दिलवर मंदिर उत्साही उदाहरण हैं।

प्रत्येक धातु की सम्पत्तियॉ

लेड और जिन्क लुप्त क्यों है तथा कॉपर आदि में अधिकता–बढ़ौतरी आदि का अध्ययन।

टेराकोटा : विभिन्न प्रकार के क्लेज, वैरिंग इन पोरोसिटी टू रफ और फाइन का मिश्रण ग्रोग फार बेटर फायरिंग पोसीबलिटीज (अग्रि सम्भावनाओं क दृष्टि से)

अर्दन वेयर, पत्थर वेयर

वैक्स :

सेरेमिक तथा पोर्सलीन तथा चाइना। सैंड, फ्लिंट, बाल क्ले, वेन्टोनाइट ग्रोग से अधिक प्लास्टीसिटी मिलती है तथा इससे कार्य में रंग विविधता भी। विभिन्न प्रकार के किलन्स बनाने के लिए धातु कास्टिंग मोल्ड्स, टेराकोटा तथा सेरेमिक। अधिक मोल्ड्स के लिए ऊपर ग्राउंड तथा किलन्स तैयार किए जाते है। सेरेमिक वी0 अधिक तापमान का प्रबन्ध 1000 डिग्री सेल्सीएट से अधिक बांछनीय है।

पापीअर मे"ा–पेपर पल्प फाइबर्स तथा क्ले बाडीज के विभिन्न तरह के मिश्रण से आ"चर्यजनक संरचनात्मक परिणामों के लिए

प्लास्टर ऑफ पेरिस–"ाुद्व माध्यम स्वरूप प्रयुक्त तथा अन्य माध्यम से मिश्रित भी

सीमेंट, ईटें, रेत तथा पेब्बलस–इनका मेल

फाइबर ग्लास तथा रेसिन कास्टिंग के लिए

वेल्डिंग तथा ब्रेजिंग

प्रका"ा, लेजर बीम्स

लोहे की सलाखें

बम्बुज् तथा रस्सियॉ

व्यर्थ सामग्री– यथा प्लास्टिक थैले, कागज तथा कोई कैन्स आदि

सामग्री का पुनर्स्थापना यथा– लेड पाइप्स, ब्राड पाइपें, कोणदार लोहे, तारों को लपेटना, बड़े तथा छोटे कीले, काष्ठ स्टैंण्ड, गतिमान तथा स्थिर।

यंत्र पत्थरों में मुड़ाव शताब्दियों से मूर्तिकारों द्वारा पूर्व निर्धारित क्रम अनुसार यंत्रों का उपयोग (प्रयोग) सम्बन्ध रहा है।

बड़े चंक्स की हैकिंग तथा चिपिंग के लिए पिचेर का प्रयोग

पंच–रेत पत्थरों के लिए प्वाइंट चिजेल फ्लैट्टन्ड पंच का उपयोग।

क्लाब– पंच करविंग के बाद– ब्राड फ्लैट चिजेल

चिजेल (छैनी) टर्म जो अधिका"ातः स्पष्ट काटने में प्रयुक्त होता है हार्ड ग्रानाइट्स से टांगस्टेन टिप्स को आसानी से निर्मित किया है।

यंत्रों को, विभिन्न प्रकार के पत्थरों को आकार देने के लिए उन्हें सख्त और नरम होना अपेक्षित है।

हथौड़ों की विविधता यंत्रों के अनुकूल हो –आकार तथा भार

काशठ काविंग टूल्स – विभिन्न प्रकार की आरियॉ, कुल्हाड़े, बंद आरा, चौखटी आरा, धनुआरा, गोल आरा, जंजीर आरा, काष्ठ देख छेनी, वुड गेज आव"यक हैं।

सैंड पेपर्स आदि सरफेस ट्रीटमेंट–पालि"ा के लिए यथावत्।

पूर्व कथित विभिन्न सामग्री के उपयोग की तकनीक–मूर्तिकला निर्माण के लिए गढ़ी (स्वरूप तैयारी), बनाई तथा वेल्ड की जा सकती है।

धातुएॅ– कांस्य, पीतल, अलुमीनिअम (सैंड कास्टिंग, लॉस्ट वेक्स प्रक्रिया सिरे पेडयू) हस्त सामग्री पद्वति निर्माण में, स्वभाव–प्रकृति की सम्भावना (औचित्य) को ध्यान में रखते हुए कास्टिंग की सीमाएॅ। प्रत्यक्ष थोथी परिकल्पना (हालो इमेज) निर्माण में लेअरल (तहों) के दबाव में तार तथा जागेरी के साथ सैंड की वि"ाष्ट तैयारी–प"चात् धातुओं की ढलाई कोटरिका (काविटी) में आब्जेक्ट को हटा बनाना।

फ्लैट सरफेसिस तथा सोलिड कास्टिंग।

मिश्र धातुओं की बनावट का ज्ञान रेत कास्टिंग रनर की प्रकृति।

लॉस्ट वेक्स प्रक्रिया–मूर्ति कला के निर्माण में हथियार से या इसके बिना प्रत्यक्ष वेक्स शेप बिल्डिंग से है। रनर को जोड़ तथा राइजर, स्परूस, सर्फेस के ऊपरी भाग की धातु ढलाई के

लिए चिमनी का प्रयोग होता है। सांचा–ढॉचा–निमार्ण (मोल्ड मेकिंग) के लिए इन्डेजेनियस तथा इतालवी प्रक्रिया का उपयोग होता है। इन्डेजेनियस में स्थानीय, क्ले चावल छिलका, गाय–गोबर और उपादान।

उपादानों की श्रेणियॉ – वेस्ट मोल्डज, पीस मोल्ड्ज तथा मदर मोल्ड्ज, रबर मोल्डज, प्लास्टर आफ पेरिस में। कांस्य की अधिक प्रति"ात से धातु ढलाई (मेटल कास्टिंग) स्थाई आउटडोर प्लेसमेंट्स।

काई– रसायन प्रतिक्रियाओं द्वारा रंग प्रभाव प्राप्ति तथा सतही को सील करना तथा सुरक्षित रखना।

लोहा ढाल

रेत ढाल द्वारा लोहा ढाल

लोहे की छड़ को गर्म करना और चाट मारना ताकि इसका पूर्ववत् प्रभाव बना रहें

टेराकोटा– फायारड् क्ले–कड़ा आकार, हालो बिल्डिंग क्वाल पद्वति द्वारा–"ाीट बीटिंग पद्वति तथा चक्र (व्हील) बिल्डिंग। होलो कास्टिंगस् पीस मोल्डज के उपयोग द्वारा शुद्व बीज़ वेक्स, रेसिन तथा पाराफीन मिश्रित उद्दे"य पूर्ति हेतु। वेक्स की प्रत्यक्ष कारगुजारी से भीतरी वेस्ट या पीस मोल्ड्स वांछित थिकनेस (पतली) कास्टिंग के लिए।

कुट्टी को तैयार किया जा सकता है ऐक्य या अन ऐक्य आधार पर अन्य विभिन्न सामग्रियों के मिश्रण से भी।

प्लास्टर ऑफ पेरिस–मूर्ति निर्माण के लिए आव"यक

प्रत्यक्ष प्रक्रिया

सॉचे में ढलना

मूर्ति ढाल

सीमेंट— रेत और रोड़ों के प्रकारों के मिश्रण से मूर्ति निर्माण का प्रत्यक्ष प्रयोग है।

कास्टिंग इनसाइड वेस्ट या पीस मोल्ड्स

आउड डोर का विचार

ईटें— निमार्ण के लिए स्वतंत्र प्रयुक्त तथा उसकी पुननिर्माण (स्थापना रि—इन्फोर्समेंट) के लिए

फाइबर ग्लास कास्टिंग : आकार की कास्टिंग के लिए

ट्रांस्लुसेंट

कम भार एक वि"ोष गुण है

रेसिन कास्टिंग—पारद"र्िकता

वेल्डिंग—ब्रेजिंग भिन्न सम्भावनाऍं

छोटी और बड़ी मूर्तियों के लिए

लेनीअर तथा हालोड आकार

प्रका"ा—लेजर बीम्स—प्रदीपन के लिए प्रयुक्त

आकार

प्रका"ा जक्सटापोज

लेहे छड़िया—स्वतंत्र प्रयुक्त प्रयोग तथा प्रत्यक्ष्ज्ञतः वेल्डिंग

छिपी शक्ति के लिए सामग्री की पुनर्स्थापना की तरह

बेकर सामग्री

चक्रवत् मेजे—विभिन्न ऊॅचाइयॉं, चुराइयॉं

एक या अधिक इकाइयों का मिलन—उन्हीं का उपयोग या भिन्न सामग्री

कम्प्यूटर पर प्रत्यक्ष शेप मेकिंग मेल

दो डी काफी तरफ (2 डी)

शेप्स का विच्छेदन

वि"लेषण सुविधा के लिए

मूर्तिवत् बर्तन

अन्कंवें"ानल डिजाइन/तत्व में

किया"ील

अकिया"ील बर्तन

मूर्तिवत् गहने

अर्द्ध परम्परित

आधुनिक

आधुनिक वे"ाभूषण से मेल

मूर्तिवत् इण्ड्स्ट्रीअल डिजाइनिंग

इवेंट प्रबंधन मूर्तिकारों द्वारा यथा मंच (विवाह) कार्य

स्मारक मूर्तिकला, पारिवे"ाक मूर्तिकलाएँ (एन्वायरमेंट) क्षेत्र, समस्याएँ, विस्तार वि"लेषण, संकल्प तथा विकास।

स्मारक मूर्तिकलाएँ भारतीय मूर्तिकारों द्वारा : डी0 पी0 रायचौधरी, राम किंकर बैज, कुन्हीरामन, एम0 धरमानी, बी0एस0 कत्त, नागजी पटेल लतिका कट्ट आदि।

मूर्तिकला का इतिहास – पूर्व इतिहास, इजिप्"ान, ग्रीफ, हेल्लेनूस्टिक, रोमनेस्क, गौथिक, रिनैसांस, नियो क्लासिकल, भारतीय– मोहनजोदड़ो, इण्डस वैली, मौर्य, शुंग, सातवाहन, चालुक्य, राष्टकुट, चोल, कु"ाान, व्यक्तिवाद, आधुनिक मूर्तिकला।

पा"चात्य कला का दृढ़ प्रभाव, लोक कला ट्राइबल कला, क्लासिकल कला, ऐतिहासिक कला भारतीय आधुनिक समकालीन मूर्तिकला।

समकालीन मूर्तिकला, रूप का महत्व, उद्योगीकरण, विज्ञान तथा टेक्नौलॉजी, नवीन प्रयोगों–स्थापनाओं के प्रति रूचि।

मूर्तिकला के सौन्दर्य बोधात्मक कथ्यों में परिवर्तन, भारतीय मूर्तिकला में नये परिदृ"य, मूर्तिकला के क्षेत्र में व्यापार समकालीन मूर्तिकारों की समस्याएँ–विभिन्न कलाओं का समकालीन अध्ययन।

भारतीय आधुनिक कला, ब्रिटि"ा कोलोनियल चित्रकला, बंगाल स्कूल, राजा रवि वर्मा, अकादमिक यथार्थवाद, प्रगतिवादी स्कूल, आन्दोलन रूप में कला की अनिवार्यता, शैलियॉ तथा स्कूल–भारतीय कला के, भारतीय समकालीन कला की समस्या।

यथा– अबनिन्द्रनाथ टैगोर, नंदलाल बोस, यामिनि राय, ए0 शेरगिल, रामकिंकर बैज, रवीन्द्रनाथ टैगोर, चुकताई, बिनोद बिहारी मखर्जी, प्रोदोष दासगुप्ता, निरोद मजुमदार, संखो चौधरी, एन0 एस0 बेंद्रे, धनराज भगत, प्रगतिवादी कलाकारों का समूह कलकत्ता तथा बम्बई के सुधीर ख"तागीर, चित्त प्रसाद, धुरंदर, ठाकुर सिंह, महात्रे।

पा"चात्य मूर्तिकला तथा चित्रकला तथा चित्रकला में प्रमुख शैली वैज्ञानिक प्रगति, इम्प्र"ानिज्म, एक्सप्रे"ानिज्म (अभिव्यक्तिवाद, अभिव्यंजनावाद), क्यूबिज्म, फ्यूचरिज्म, सुरेलिज्म, यूरोपीय, अमरीकी, तथा समकालीन कला। स्थानीय प्रभाव से इन्डेजीनस सामग्री का उपयोग– पल्सीकर, पणिकर, जे0 स्वामीनाथन, जानकीराम, सती"ा गुजराल, बीरेन डे, नागजी पटेल,

मीरा मुखर्जी, जैराम पटेल, सु"ोन घोष, बलबीर एस0 कट्ट, वेद नायर महेन्द्र पंड्या, राघव कनेरिया आदि।

UNIT – IV

सौंदर्य बोधात्मक (ऐस्थेटिक्स) तथा कला समीक्षा इतिहास

भारतीय कला के सामान्य सिद्वान्त, कला तथा सुन्दरता, परिकल्पना (इमेज मेकिंग) के सिद्वान्त (प्रतिमा मान विज्ञानं तथा अन्य कैननस्), भारतीय चित्रकला के छः लिम्बस (षड्ग) तथा छै चीनी चित्रकला के छै कैननस्, रस, ध्वनि, अलंकार, औचित्य तथा रीति के सिद्वान्त तथा अन्य कला–प्रस्तुति (मेकिंग) तथा व्यूइंग की समझ में इनकी प्रासंगिकता। दृ"य कला और परफार्मिंग कला में अन्तरसम्बंध, चित्रसूत्र में चित्रकला का वर्गीकरण। क"यवरिद्वि, गुण–दोष, 'ाड्ऋषिः, वर्तन, निम्नोन्त, आदि का सिद्वान्त। कला के दृ"य और अदृ"य पक्ष (दृ"य/अदृ"याम), रेखा (लाइन) लिनीअर रिदम (छंद) कला के संगठनात्मक (कम्पोज़ी"ान्ल), पक्ष, परिदृ"य, रूप तथा कथ्य। संरचना–साधन (विष्णुधर्मोत्तोर, बृहत्सम्हिता तथा अन्य ि"ाल्प"ाास्त्र पाठ) का"मीरी सौन्दर्य"ाास्त्री।

कला–इतिहास का क्षेत्र (स्कोप) के बीच वि"िाष्टता तथा अति व्याप्ति। कला–समीक्षा, सौन्दर्य बोधात्मक पद्वतियॉ। कला–इतिहास तथा इन्थ्रोपोलॉजी, आरक्योलॉजी, सांस्कृतिक इतिहास तथा फिलालॉजी (भाषा शास्त्र) के अन्तसम्बन्ध। एक ज्ञानानु"ाासन के रूप में कला–इतिहास का विकास। कोत्रोसेउर"िाप तथा केटेलोग रीसेन। रूपवाद (फार्मालिज़्म) का विकास (वोल्फलिन, रिगेल, रोज़र फ्राइ, ग्रीनबर्ग), आइकोनोलॉजी (गोमब्रिच तथा पनोफस्की), विजुअल परसेप"ान (रूडोल्फ अर्नहीम) तथा नया (न्यू) कला–इतिहास (ब्राइसोन, हल फोस्टर), आनन्द कुमारास्वामी तथा स्टल्ला क्रमरिस्च तथा उनकी भारतीय कला ऐतिहासिक अध्ययन में प्रासंगिकला।

कला तथा सौन्दर्यबोध शास्त्र सम्बन्धी पा"चात्य दृष्टि (सोच): प्लेटो, अरस्तू, अल्बर्ठी, वासरी, बेल्लोरी, रेयनोल्डस्, डिडेरोट, विन्केलेमान, क्रोचे, टालस्ताय आदि। कलाकारों का लेखन और आधुनिक कला आन्दोलनों के मेनीफेस्टोज़ (लक्ष्य), अवंत–गर्डे का सिद्वान्त। सिमोटिक्स सिद्वान्तों का आ"ाय (इम्पलीके"ान) संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद, उत्तर आधुनिकतावाद तथा स्त्रीवाद (फेमीनिज्म) कला सोच और लेखन में।